बाल विज्ञान पत्रिका

सितम्बर 2008 • 15 रुपए

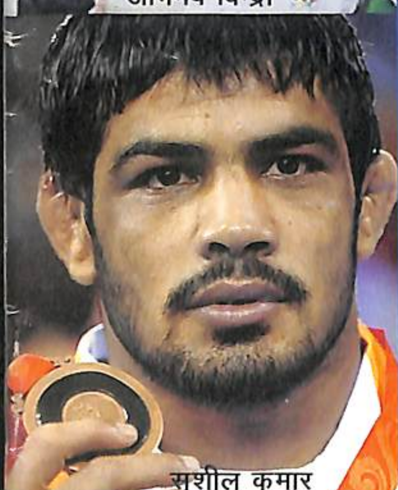
चकमक

Beijing 2008

हमारी स्वर्णिम दस्तक!



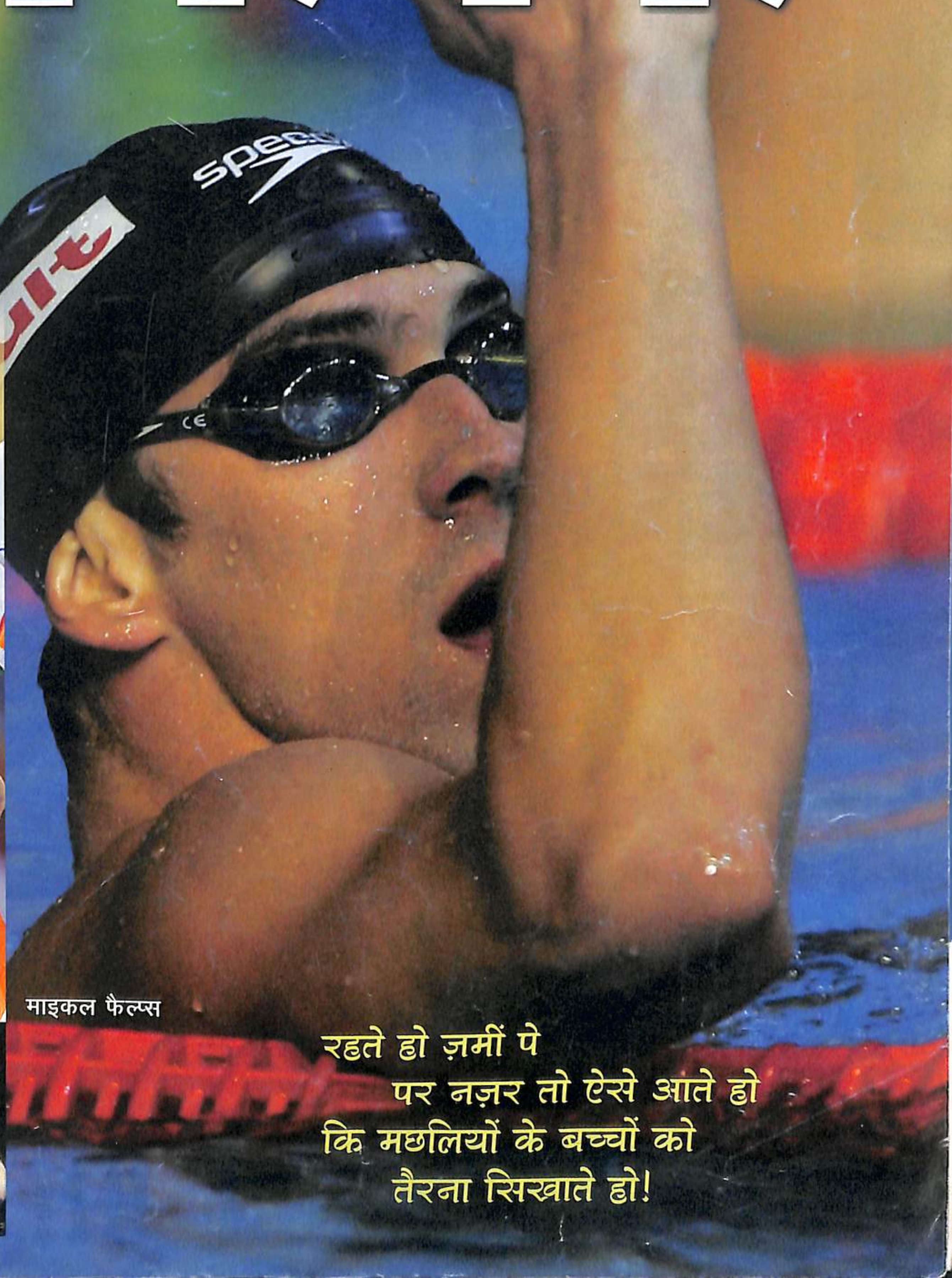
अभिनव बिन्द्रा



सुशील कुमार



विजेन्द्र कुमार



माइकल फैल्प्स

रहते हो ज़मीं पे
पर नज़र तो ऐसे आते हो
कि मछलियों के बच्चों को
तैरना सिखाते हो!

चोंच पोंछने के लिए रुमाल नहीं इसलिए पंखों से पोंछ रहे हो?

नहीं जनाब!... बात यह है कि पंख पक्षियों के लिए खास मतलब रखते हैं। इसलिए इनकी साफ-सफाई का पक्षी बड़ा ध्यान रखते हैं। जैसे, तुम अपने बालों में तेल-कंघी करते हो वैसे ही ये भी अपने पंखों पर तेल लगाते हैं। ज़्यादातर पक्षियों की पूँछ के पास तेल ग्रंथियाँ होती हैं। चोंच से रगड़कर वो अपने पंखों पर तेल की हल्की-सी परत बना देते हैं। इससे पंख पानी में गीले नहीं होते। पानी में भोजन की तलाश करने वाले पक्षियों के लिए तो यह तेल मालिश और भी ज़रूरी है। क्योंकि अगर ऐसा न हो तो भीगने से पंख भारी हो जाएँगे जिससे पक्षियों को उड़ने बहुत मशक्कत करनी पड़ेगी। और उनके डूबने का खतरा बना रहेगा।









इस तस्वीर को देखकर तार पर सूखते कपड़े याद आ गए न? इन लिटिल कॉरमोरेंट पक्षियों को खाने के लिए बड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। ये पानी में डुबकी लगाते हैं फिर पानी के भीतर ही तैरते हुए अपने शिकार का पीछा करते हैं। शिकार पर कब्ज़ा कर जब वे बाहर आते हैं तो पूरी तरह से भीग चुके होते हैं। इनकी समस्या यह है कि बाकी कई पक्षियों की तरह इनके पास तेल ग्रंथियाँ नहीं होतीं। इसीलिए भीगे पंखों को सुखाने का इसके पास बस यही एक तरीका बचता है।

दुनिया के सबसे तेज़ दौड़ाक

100 मीटर - 9.69 सेकेण्ड



100 मीटर - 10.78 सेकेण्ड

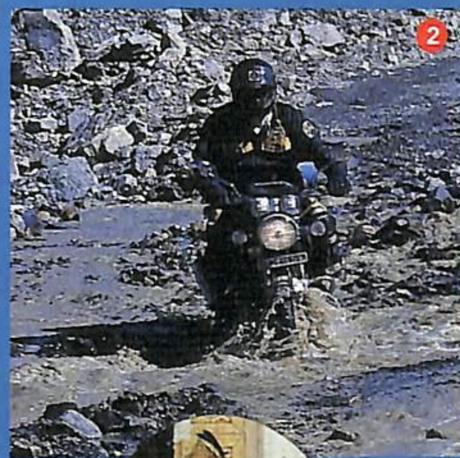


चकमक

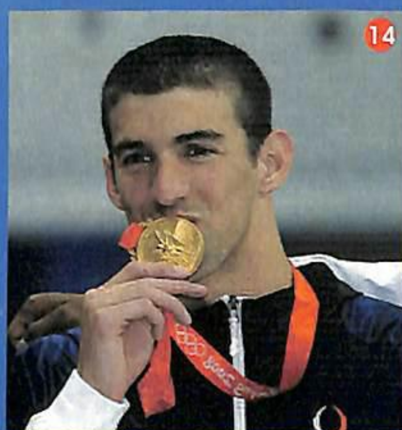
बाल विज्ञान पत्रिका • 264 • सितम्बर 2008

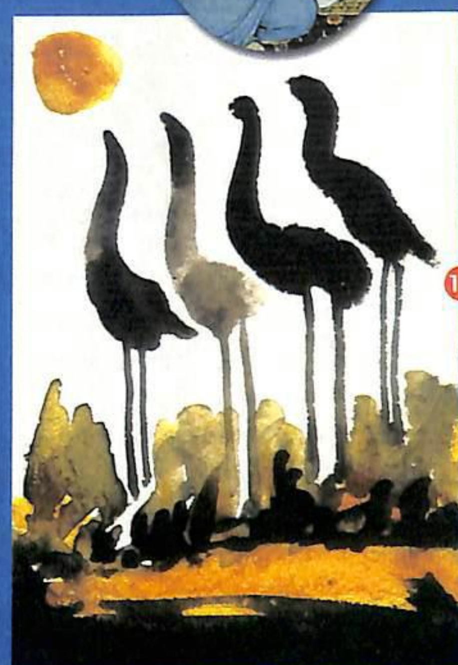
इस अंक में















एस.आई.जी/आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी

सम्पादकीय सलाहकार
रेक्स डी रोज़ारियो
तेजी ग्रोवर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
अतनु राय
डिजिटल एक्सप्रेशन्स

वितरण
अनिल लोखण्डे

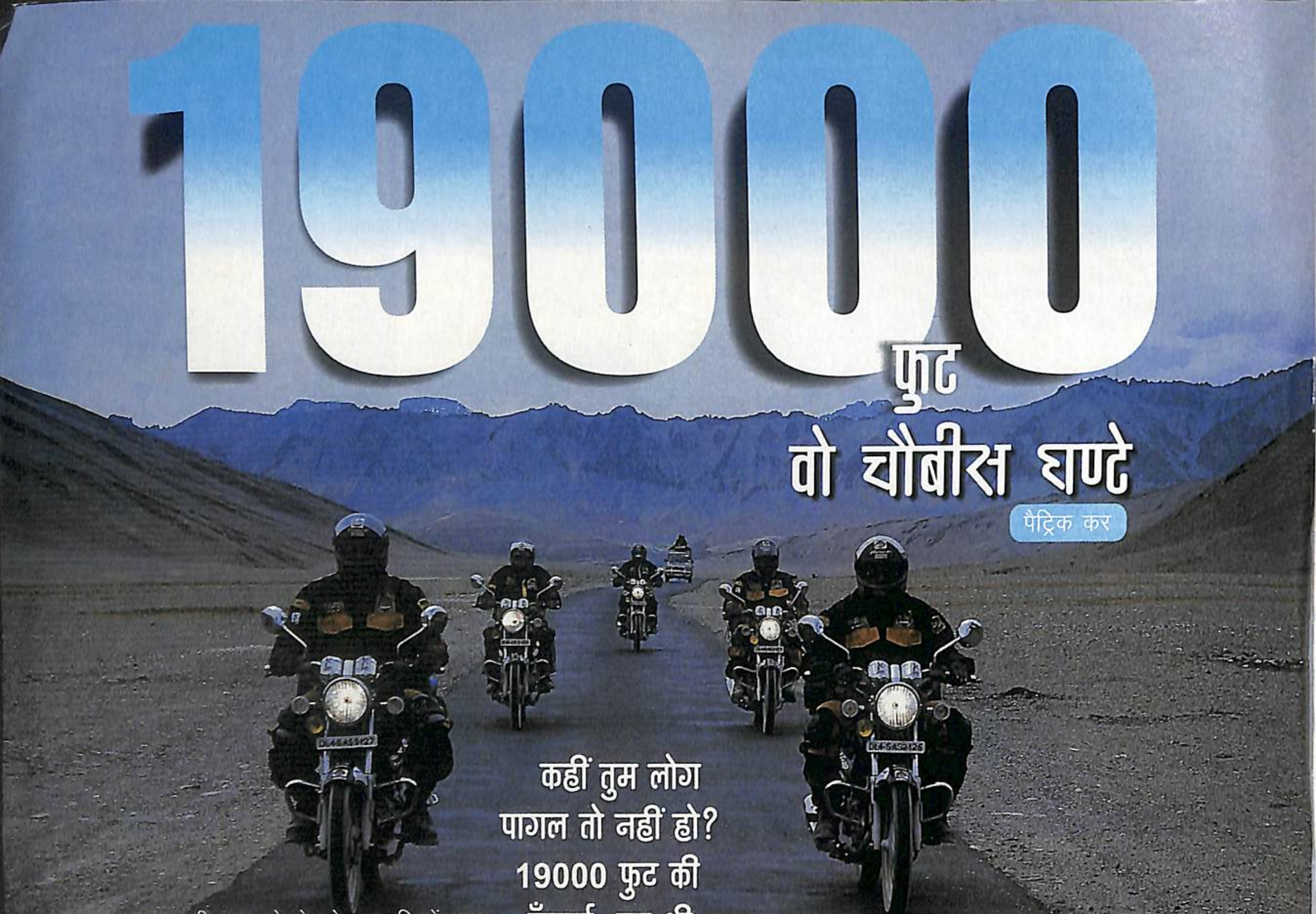
सहयोग
मिहिर
प्रीति चौहान
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क
एक प्रति - 15.00
वार्षिक - 150.00
दो साल - 275.00
तीन साल - 400.00
आजीवन - 3000.00

सभी डाक खर्च हम देंगे। चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं। भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर
भोपाल, म.प्र. 46 2016
फोनः (0755) 2671017, 2550976, 6549033
फैक्सः (0755) 2551108
chakmak@eklavya.in
circulation@eklavya.in
www.eklavya.in

19000 फुट वो चौबीस घण्टे



पैट्रिक कर

कहीं तुम लोग पागल तो नहीं हो? 19000 फुट की ऊँचाई, वह भी मोटरसाइकिलों पर?

सब यही कह रहे थे। वे सब, जिन्हें पता चला कि हम दुनिया के सबसे ऊँचे चार दर्रों को 24 घण्टों में 600 कि.मी. की दूरी तय करके पार करने वाले हैं। हम 6 लोग थे। हमारे अभियान को टी. वी. एस. मोटर कम्पनी ने प्रायोजित किया था और वही हमें सारी तकनीकी सहायता देने वाली थी। तकनीकी टीम का मुखिया विक्टर था। इसके अलावा हमारे साथ कैमरा टीम थी जिसे हमारे अभियान को अपने कैमरे में कैद करना था। इस तरह हमारे काफिले में कुल मिलाकर 6 मोटरसाइकिलें और 4 खास सुविधायुक्त गाड़ियाँ थीं। हमारा अभियान 21 जुलाई को शुरू होना था। उस दिन सुबह 6 बजे तक हम सब माइक के घर पर सामान की पैकिंग में लगे थे। सामान में स्लीपिंग बैग, बिना पके भोजन के पैकेट, ऑक्सीजन के सिलिंडर, प्राथमिक चिकित्सा का बक्सा, हैल्मेट, स्टोव, बर्तन, तम्बू, जैकिटें आदि शामिल थे। टीम के हर सदस्य को 5 टी-शर्टें, एक जैकिट, एक बेसबॉल टोपी, ऊनी टोपा और दास्ताने दिए गए थे। हम सभी के पास टी. वी. एस. फेरो मोटरसाइकिलें थीं। इनके टैंक के साथ एक बैग लगा हुआ था। इसमें खाने और ज़रूरत का कुछ सामान था। हर मोटरसाइकिल के साथ एक चटाई, स्लीपिंग बैग और पानी की बोतल की व्यवस्था की गई थी कि अगर कोई सदस्य बिछड़ जाए तो अपना काम चला सके। हम सभी ने टी-शर्ट, जम्प सूट, जूते, हैल्मेट, चश्मा और दस्ताने आदि पहने हुए थे। इसके अलावा घुटनों और कोहनियों को छिलने से बचाने के लिए भी हमने विशेष उपकरण पहने थे। अब हम अपने अभियान के लिए बिल्कुल तैयार थे। माइक के घर से एक कतार में मोटरसाइकिलों पर बैठकर हम लोग इंडिया गेट पहुँचे। 1 बजे हमारी गाड़ियों के नट बोल्ट दुरुस्त किए गए। और शुरू हुई हमारी यात्रा। लोग अपनी लय-ताल बनाते-बिगाड़ते अपनी गाड़ियाँ चला रहे थे। बड़े वाहनों पर बैठी कैमरा टीम हमें अपने कैमरों में कैद कर रही थी। दिल्ली से बाहर एक ढाबे में हमने दही-लस्सी के साथ आलू के पराठे खाए। और चल दिए चंडीगढ़ की ओर। चंडीगढ़ पहुँचते-पहुँचते हमारी कमर का निचला सिरा सुन्न-सा हो गया था। चंडीगढ़ से रोपड़ जाने के लिए हमने वो रास्ता पकड़ा जहाँ गाड़ियाँ सुधारने की सहूलियत थी।

(बाकी हिस्सा पृष्ठ 22 पर)

लखनऊ की एक छोटी-सी गली में सादिक अपने पिता के होटल में बैठा बिरयानी की प्लेट से मक्खियाँ भगा रहा था। अचानक उसकी नज़र घोड़े से उतरते एक शख्स पर पड़ी। वह उसी की ओर आ रहा था। साथ में दो नौकर भी थे।

आदमी देखने में रईस लग रहा था। उसे अपनी ओर आता देख सादिक को आश्चर्य हुआ। उस वक्त सादिक के अब्बा मोहम्मद कादिर अँगीठी पर कबाब पका रहे थे। इतने में दो में से एक नौकर दुकान पर आया और बोला, "नवाब हसन अली साहब आए हैं।"

रेश्मी अचकन पहने नवाब दुकान में आए और कादिर से बोले, "हमने सुना है कि तुम बहुत अच्छे खानसामा हो। कौन-सा पकवान सबसे लज़ीज़ बनाते हो? हम उसे चखना चाहेंगे।"

"दाल।" इतना कहकर कादिर कबाब पकाने में लग गए।

"दाल, सिर्फ दाल?" नवाब साहब ने आश्चर्य से पूछा।

"मैं बिरयानी, कोरमा और भी कई तरह के मज़ेदार पकवान बनाता हूँ, लेकिन आपने सबसे लज़ीज़ पकवान के बारे में पूछा था। इसलिए मैंने दाल कहा।" कादिर ने कहा।

"केवल दाल? हमारे दोस्त तो यहाँ के पूरे खाने की काफी तारीफ करते हैं। इसीलिए तो हम यहाँ चले आए।"

"लेकिन आपने मेरे हाथों बनी दाल अभी चखी कहाँ है?"

"ठीक है। हम इस खास दाल को ज़रूर चखना चाहेंगे। तुम कौन-सी खास दाल बनाते हो?"

"उड़द की।"

"ठीक है, खिलाइए। देखते हैं, इसमें क्या खास है।"

सुभद्रा सेनगुप्ता

दाल लज़ीज़

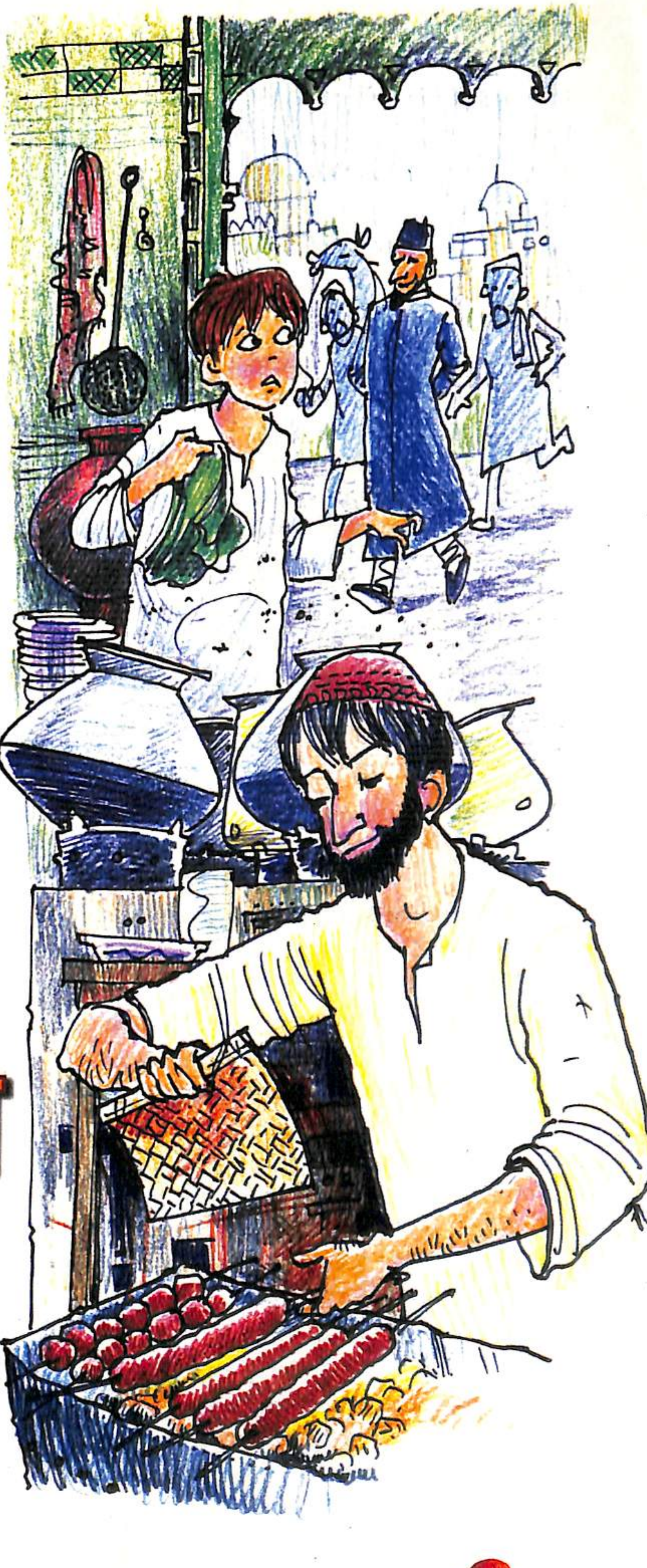
"लेकिन दाल अभी तैयार नहीं है जनाब।"

"क्या....?" नवाब साहब गुस्से में बोले।

"इस खास शाही उड़द दाल को मैं केवल ऑर्डर पर ही बनाता हूँ। इसमें बड़े खास मसाले डलते हैं। बनाने में पूरा एक दिन लग जाता है। यदि आप चाहें तो मैं कल दोपहर तक इसे आपके लिए बना सकता हूँ।" कादिर बोला।

"ठीक है, कल तुम यह दाल बनाकर हमारे घर ले आना।" नवाब ने कहा।

"ऐसा न हो पाएगा जनाब।" कादिर बोले।



"क्यों, इसमें क्या परेशानी है?"

"हुज़ूर, मेरी बनाई दाल का स्वाद लेने के लिए तो आपको यहीं मेरी दुकान में ही आना होगा और उसे तुरन्त खाना होगा।" कादिर बोला।

"और अगर हमें आने में देर हो गई तो?" नवाब ने पूछा।

"तो मैं वह दाल या तो गरीबों में बाँट दूँगा या फेंक दूँगा।" कादिर ने दो टूक जवाब दिया।

सादिक अपने अब्बा और नवाब की बातें सुन रहा था। अब्बा के स्वभाव से वह वाकिफ था। इसी वजह से उसके अब्बा कई अच्छे ग्राहक खो चुके थे। नवाब हसन अली भी इससे पहले इतने अकड़ू खानसामे से नहीं मिले थे। उन्होंने सोचा चलो इसकी दाल एक बार चख ही ली जाए। "ठीक है, कल जब तुम्हारी शाही दाल बन जाए तो हमें खबर कर देना।" कहते हुए नवाब चल दिए।

सादिक ने राहत की साँस ली। उसे डर था कहीं अब्बा की बातें सुनकर नवाब साहब नाराज़ होकर वहाँ से चल न दें। नवाब अच्छे खाने के शौकीन थे। सादिक ने सुन रखा था कि लज़ीज़ खाने से खुश होकर वे खानसामों को अच्छी-खासी बख्शीश दिया करते थे। उसे उम्मीद थी कि नवाब साहब को दाल पसन्द आ गई तो वे इसके एवज़ में भी अच्छा-खासा इनाम देंगे।

शाही उड़द दाल में डलने वाले मसालों की खरीद के लिए शाम को सादिक अपने अब्बा के साथ बाज़ार गया।

"आदाब कादिर मियाँ, कहो, कैसी चल रही है खरीददारी?" यह वही नौकर था जो सुबह नवाब के साथ आया था।

"आदाब।" कहकर कादिर फिर खरीददारी में जुट गया। उसे बेकार की बातचीत पसन्द न थी। लेकिन सादिक ने उसकी ओर देख मुस्कुराकर कहा, "लगता है आपके नवाब साहब को खाने का बड़ा शौक है।"

"हाँ, बहुत ज़्यादा।" नौकर ने हँसते हुए कहा। "वे हमेशा नए-नए पकवानों का ज़ायका लेने के लिए दुकानों पर जाते रहते हैं। अगर कुछ पसन्द आ गया, तो क्या कहना। वे इसके लिए खानसामे को बढ़िया बख्शीश देने से भी नहीं चूकते।"

"सचमुच?" सादिक ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, "क्या देते हैं वे इनाम में?"

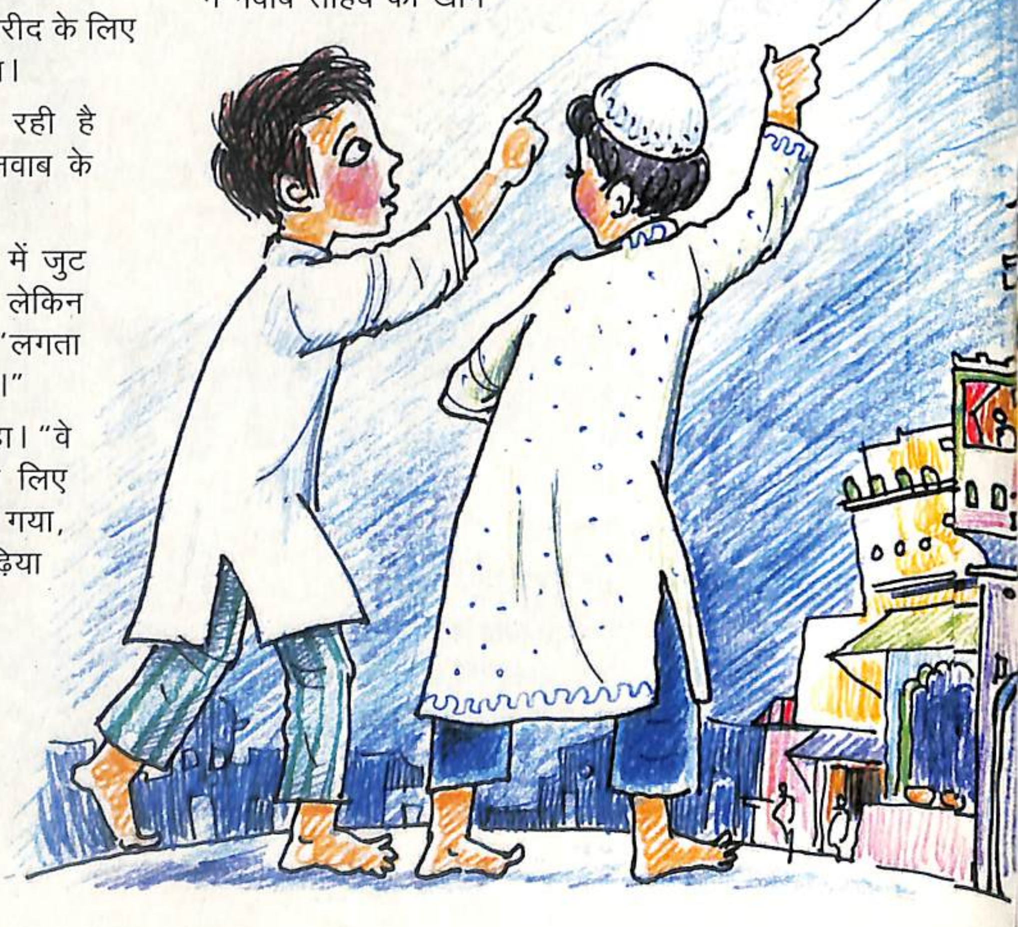
"नवाब साहब बेहद रईस हैं। एक बार तो उन्हें पुलाव-पसन्दा इतना अच्छा लगा कि खानसामे को नई दुकान ही खरीदकर दे दी। एक दूसरे बावर्ची को हीरे की अँगूठी दे दी।" नौकर ने कहा।

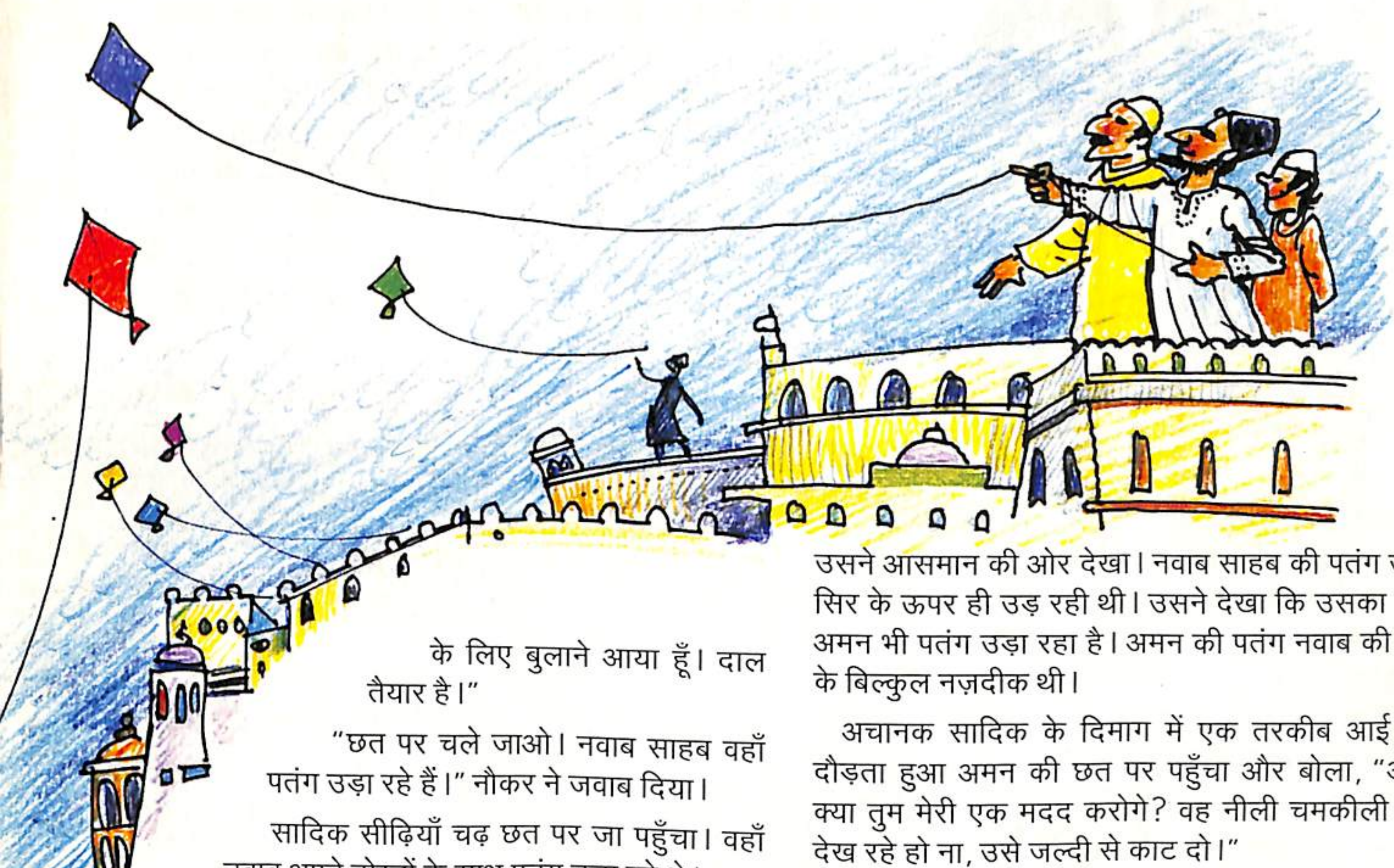
इतने में अब्बा ने सादिक को आवाज़ लगा दी। रास्ते भर वह दाल के बदले में मिलने वाले इनाम के बारे में ही सोचता रहा। उसे पता था कि उसके अब्बा की बनाई शाही दाल उतनी ही उम्दा होती है जितना किसी और खानसामे का बनाया पुलाव-पसन्दा या कोई दूसरा सालन।

अगली सुबह सादिक अपने पिता के साथ दुकान पहुँचा। और उन्हें दाल साफ करने, घी बनाने, हल्दी कूटने, प्याज़, लहसुन, अदरक आदि काटने में मदद करने लगा। इसके बाद वह अपने अब्बा को दाल बनाते हुए देखने लगा। कादिर ने दाल के साथ ककड़ी का रायता, पुदीने की चटनी, आलू-फूलगोभी की सब्ज़ी, नर्म-मुलायम काकोरी कबाब भी बनाए। गरमा-गरम तन्दूरी रोटी परोसने का भी बन्दोबस्त कादिर ने किया था। मीठे में फिरनी तैयार की गई थी जो नवाब को बहुत पसन्द थी।

सब कुछ तैयार था। हाण्डी में रखी दाल धीमी आँच पर उबल रही थी। रोटी के लिए आटे की लोइयाँ भी बना ली गई थीं। मिट्टी के बर्तन में रायता ठण्डा हो रहा था। कादिर ने सादिक से कहा, "जाओ, नवाब साहब को बुला लाओ। कहना खाना तैयार है।"

यह सुनकर सादिक नवाब हसन अली की हवेली की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने नौकर से कहा, "मैं नवाब साहब को खाने





के लिए बुलाने आया हूँ। दाल तैयार है।"

"छत पर चले जाओ। नवाब साहब वहाँ पतंग उड़ा रहे हैं।" नौकर ने जवाब दिया।

सादिक सीढ़ियाँ चढ़ छत पर जा पहुँचा। वहाँ नवाब अपने दोस्तों के साथ पतंग उड़ा रहे थे।

सादिक नवाब के पास गया और धीरे-से बोला, "नवाब साहब, चलिए दाल तैयार है। मेरे अब्बू आपको बुला रहे हैं।"

वहाँ खड़े नवाब के एक दोस्त ने कहा, "हसन, दाल को भूल जाओ। ज़रा अपनी पतंग पर ध्यान दो। हरी पतंग तुम्हारी पतंग को काटने ही वाली है।"

"ज़रा रुको, हम खुद ही उसे काट देते हैं।" नवाब ने डोर खींचते हुए कहा।

सादिक अपने अब्बा के गुस्से को जानता था। उसने फिर कहा, "चलिए, नवाब साहब खाना तैयार है।"

"हाँ, हाँ चलता हूँ।" हसन अली ने सादिक को नज़रअन्दाज़ करते हुए कहा। "अपने अब्बू से कहो, ज़रा इन्तज़ार करें। देखते नहीं, हमारी पतंग खतरे में है?"

"भाग जाओ बच्चे, नवाब साहब अभी व्यस्त हैं।" हसन अली के दोस्त ने कहा।

सादिक चला आया। उसे अपने सपने टूटते लगे। वह जानता था कि आगे क्या होने वाला है। जब अब्बा सुनेंगे कि नवाब साहब ने पतंग उड़ाने के चक्कर में यहाँ आने से इंकार कर दिया है तो वे बहुत नाराज़ होंगे। और गुस्से में सारी दाल भिखारियों में बाँट देंगे। इनाम को तो अब भूलना ही बेहतर है। वह रुआँसा-सा हो गया।

चुपचाप मुँह लटकाए वह घर की ओर रवाना हो गया। उसने आसमान की ओर देखा। नवाब साहब की पतंग उसके सिर के ऊपर ही उड़ रही थी। उसने देखा कि उसका दोस्त अमन भी पतंग उड़ा रहा है। अमन की पतंग नवाब की पतंग के बिल्कुल नज़दीक थी।

अचानक सादिक के दिमाग में एक तरकीब आई। वह दौड़ता हुआ अमन की छत पर पहुँचा और बोला, "अमन, क्या तुम मेरी एक मदद करोगे? वह नीली चमकीली पतंग देख रहे हो ना, उसे जल्दी से काट दो।"

"बिल्कुल, इसमें क्या दिक्कत है।" अमन बोला। अमन पतंग उड़ाने में बड़ा माहिर था। उसने पिसे काँच व सरस से एक खास तरह का माँजा तैयार किया था। इससे वह किसी भी पतंग को आसानी से काट सकता था। सादिक अमन से पतंग काटने को कहकर नवाब की हवेली की ओर दौड़ पड़ा।

वह दौड़ता हुआ नवाब साहब की छत पर जा पहुँचा। उसने देखा कि अमन की पतंग नवाब साहब की पतंग के पास जा पहुँची थी। अचानक अमन ने ज़ोर से डोर खींची। नवाब साहब की पतंग कट चुकी थी।

"ओह, नहीं।" नवाब निराश होकर ज़मीन पर बैठ गए।

सादिक के लिए यह अच्छा मौका था। उसने धीरे से कहा, "जनाबे आली, खाना तैयार है और दाल सचमुच में बहुत उम्दा बनी है।"

सादिक की यह बात सुनकर नवाब को अचानक लज़ीज़ दाल याद हो आई। वे बोले, "अरे हाँ। हम तो भूल ही गए थे। चलो खाना खाया जाए।" कहते हुए वे कादिर की दुकान की ओर चल पड़े।

कादिर की दुकान में उनके बैठने का खास इन्तज़ाम किया जा चुका था। उनके बैठते ही कादिर ने अपना खास पकवान दाल और दूसरी चीज़ें परोसीं। सादिक मक्खन लगी गरमा-गरम तन्दूरी रोटियाँ लेकर आया।

जैसे ही नवाब साहब ने रोटी का पहला निवाला शाही उड़द दाल में डुबोकर अपने मुँह में डाला, उनकी आँखें



चमक उठीं, "वाह, क्या दाल है... !" उन्होंने सभी पकवान बड़े शौक से चखे और बोले, "वाह कादिर मियाँ, आपकी दाल तो वाकई कमाल की है। हमने इससे पहले ऐसी दाल कभी नहीं खाई। इससे बेहतर तो कुछ हो ही नहीं सकता। इसके लिए तो आप वाकई इनाम के हकदार हैं। बताइए, आपको क्या चाहिए?"

यह सुनकर मोहम्मद कादिर मुस्कुराए और बोले, "मैं इमामबाड़ा के पास एक बड़ा-सा होटल खोलना चाहता हूँ, हुजूर।"

"ठीक है।" इतना कहकर उन्होंने अपने नौकर को बुलवाया और नोटों से भरा एक झोला कादिर मियाँ को देने के लिए कहा।

"हमारे ख्याल से इतने पैसे काफी होंगे होटल के लिए।" नवाब हसन अली बोले।

सादिक को अपनी शरारत पर हँसी आ रही थी। उसने सोचा अब वे भी अमीर बन जाएँगे। वह बाद में अब्बू को सब कुछ बता देगा कि कैसे उनके गुस्सा होने से पहले ही वह सही समय पर नवाब साहब को दुकान पर ले आया। वह जानता था कि अब्बू सारी बात जानकर हँस पड़ेंगे और खुश होकर उसे पैसे देंगे। शायद एक पूरी मोहर ही मिल जाए। फिर वह और अमन उससे ढेर सारी पतंगें खरीदेंगे और कुल्फी या फालूदा खाएँगे।

उधर, नवाब हसन अली लज़ीज़ दाल खाए जा रहे थे और इधर सादिक लगातार अपनी सफलता पर मुस्कुराए जा रहा था।

चित्रः जोएल गिल

एक सवाल

8

2 5 2

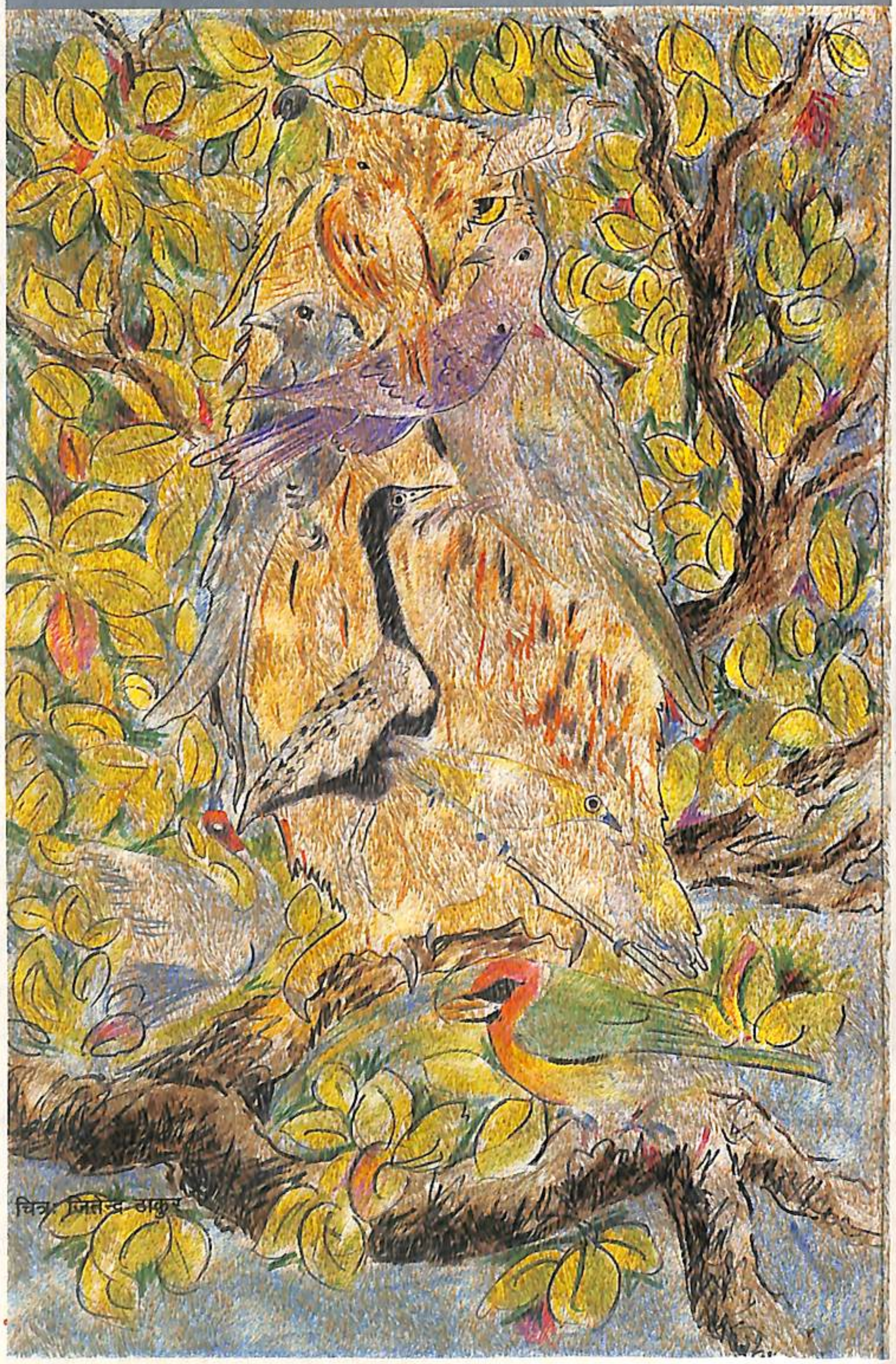
1 2 4 2 1

1 2 1 3 1 2 1

1 2 1 1 ? 1 1 2 1

यह है संख्याओं का पिरामिड। इसकी सबसे निचली लाइन में एक प्रश्नचिन्ह है। इस प्रश्न चिन्ह की जगह कौन-सी संख्या भरना ठीक होगा, और क्यों?

देखो तो, इस पेड़ पर कितने पक्षियों का बसेरा है?



चित्रः जितेन्द्र ठाकुर

सबसे बड़ा हत्यारा कौन?

नहीं। हिटलर नहीं, परमाणु बम भी नहीं.... कोई प्राकृतिक आपदा भी नहीं।

दुनिया का सबसे बड़ा हत्यारा है मच्छर



एक छोटा-सा मच्छर कई जानलेवा बीमारियों का वाहक है। वाहक यानी एक से दूसरे तक पहुँचाने वाला। जब मच्छर मनुष्य या अन्य जानवरों को डंक मारकर उनका खून चूसता है, तो उसकी लार में मौजूद रोगाणु (वायरस) शिकार के शरीर में घुस जाते हैं। ऐसे लगभग 50 किस्म के रोगाणु हैं जो मच्छर द्वारा फैलते हैं और मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, फाइलेरिया, एंसेफलाइटस, पीला बुखार आदि बीमारियाँ पैदा करते हैं। आमतौर पर अधिकतर वायरस जानवरों में ही पाए जाते हैं। मच्छर जैसे कई रोगवाहक इन वायरसों को जानवरों से या एक मनुष्य से दूसरे तक पहुँचाने का काम करते हैं।

नीचे दी तालिका को देखो। इसमें मच्छर द्वारा मनुष्य में फैलाई जाने वाली कुछ बीमारियों के आँकड़े दिए गए हैं:



मच्छर द्वारा फैलाए रोग	पीड़ितों की संख्या	मौतें (सालाना)
मलेरिया	10-30 करोड़	10-20 लाख
फाइलेरिया	12 करोड़	शून्य
डेंगू	5 करोड़	24 हज़ार
एंसेफलाइटस	30-40 हज़ार	10 हज़ार
पीला बुखार	2 लाख	30 हज़ार

मलेरिया 90 देशों में स्थानिक बीमारी है। हर साल दुनिया के प्रत्येक 100 में से 10 लोग इस बीमारी का शिकार बनते हैं। सबसे अधिक मौतें भी इसी बीमारी की वजह से होती हैं।

मलेरिया के चार रोगाणु हैं: प्लास्मोडियम फैल्सीपैरम, प. वाइवैक्स, प. मलेरिया और प. ओवले। इनमें सबसे जानलेवा वायरस है प. फैल्सीपैरम।

रेक्स डी रोज़ारिओ

क्या तुम जानते हो?

दुनिया में मच्छरों की 3,000 से भी ज़्यादा जातियाँ पाई जाती हैं।

सुशील जोशी

पेड़ का जीवन किसके लिए है?





एक वैज्ञानिक थे यान इंगेनहोज़ (1730-1799)। उन्होंने पेड़-पौधों को लेकर बहुत सारे प्रयोग किए। इनसे कई बातें समझ में आईं। खास तौर से प्रकाश संश्लेषण को समझने में इंगेनहोज़ का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। इंगेनहोज़ के प्रयोगों से स्पष्ट हुआ कि पेड़-पौधे हवा को साफ करते हैं। लेकिन यह काम वे सूर्य के प्रकाश में ही कर सकते हैं। उनके प्रयोगों से प्रकृति के बारे में हमारी समझ में बहुत इज़ाफा हुआ। लेकिन रोचक बात तो यह है कि उन्होंने ये प्रयोग क्यों किए थे। यहाँ मैं उन्हीं के शब्दों में यह कहानी कहने की कोशिश करूँगा।

एक अच्छे वैज्ञानिक की तरह इंगेनहोज़ अपने से पहले के वैज्ञानिकों के काम का वर्णन करते हैं। जैसे वे बताते हैं कि उनसे पहले वैज्ञानिक देख चुके थे कि पत्तियों को पानी में डुबाया जाए तो उनकी सतह पर हवा के बुलबुले जमा हो जाते हैं। मगर इंगेनहोज़ इन बुलबुलों के बारे में इन वैज्ञानिकों की अटकलों से सहमत नहीं थे। उनके ही शब्दों में,

"चार्ल्स बोनेट ने पानी में डूबी पत्ती पर जमे बुलबुलों पर बहुत ध्यान दिया है। उनका कहना है कि पत्तियाँ ये बुलबुले पानी में से खींचती हैं। उनका यह मत इसलिए बना क्योंकि उबले पानी में ये बुलबुले जमा नहीं होते और तब ज़्यादा मात्रा में बनते हैं जब पानी में फूँककर ज़्यादा हवा घोल दी जाए। बोनेट ने यह भी देखा कि ये बुलबुले सूर्यास्त के बाद प्रकट नहीं होते। बोनेट का निष्कर्ष है कि ये बुलबुले पानी में घुली आम हवा के हैं, जो सूरज की गर्मी पाकर फैल जाते हैं। इसीलिए ठण्डी रात में ये प्रकट नहीं होते। अन्त में बोनेट कहते हैं कि इन बुलबुलों का बनना पत्तियों की किसी सजीव क्रिया के कारण नहीं हो सकता।"

इंगेनहोज़ बोनेट के अवलोकनों से तो सहमत थे मगर उनके निष्कर्ष से नहीं:

"ये बुलबुले सूरज की गर्मी के कारण हवा के फैलने से पैदा नहीं होते हैं क्योंकि कई किस्म की पत्तियों में तो ये पानी में डुबोते ही दिखने लगते हैं, फिर चाहे पानी कितना ही ठण्डा क्यों न हो और चाहे धूप में तपी पत्ती को ही क्यों न डुबोया जाए। बुलबुले सूर्यास्त के बाद बनते तो नहीं हैं, मगर पहले से मौजूद बुलबुले रात की ठण्ड में सिकुड़ते या गायब भी नहीं होते।"

इसके बाद वे अपने प्रयोगों का ब्यौरा देते हैं। वे यह करते थे कि किसी ज़मीनी पौधे की एक टहनी को पानी से भरे एक जार में घुसा देते थे। जार को उल्टा करके पानी से भरे एक टब में रख देते थे। उनके मुताबिक,

“पानी पत्तियों को हवा के सम्पर्क में नहीं आने देता मगर पत्तियों में पहले से मौजूद हवा बुलबुलों के रूप में निकलती है और उल्टे जार के पेंदे में इकट्ठी होती जाती है। इस तरह इकट्ठा की गई हवा अच्छी गुणवत्ता की फ्लॉजिस्टनरहित हवा (ऑक्सीजन) होती है।”

लगभग इसी समय प्रिस्टले ने भी ऐसे ही प्रयोग किए थे। प्रिस्टले का निष्कर्ष था कि पानी में ऐसा गुण है कि कुछ दिनों तक रखा रहने पर यह लाभदायक गैस बनाता है। इसके आधार पर प्रिस्टले ने कहा था कि समुद्रों, झीलों और नदियों का पानी हवा को शुद्ध करता है। मगर इंगेनहोज़ ने प्रिस्टले के प्रयोगों को फिर से देखकर कहाः

“ऑक्सीजन तब तक पैदा नहीं होती जब तक कि जार में हरा पदार्थ (वनस्पति) न जमे। इसका मतलब है कि यह हवा पानी से नहीं बनी है बल्कि ज़िन्दा पत्ती में दिन के प्रकाश के कारण चल रही किसी क्रिया की वजह से बनी है।

“यह सही है कि धूप में रखने पर साधारण पानी में भी कुछ बुलबुले बनते हैं। मैंने कई सारे जारों में पानी भरकर उन्हें उल्टा करके धूप में रखा और उनमें बुलबुलों से इकट्ठी हुई हवा की जाँच की। यह साधारण हवा से भी बदतर थी। और श्वसन के लिए पूरी तरह अनुपयुक्त थी।”

इस प्रकार से इंगेनहोज़ यह दिखा पाने में सफल रहे कि जो ऑक्सीजन निकलती है वह पानी में से नहीं, पत्तियों में से निकलती है। तो क्या यह पत्तियों में भरी होती है? इंगेनहोज़ का अगला काम इसी का खुलासा करना थाः

“यदि ऑक्सीजन पत्तियों में शुद्ध अवस्था में है, तो उन्हें पानी में डुबोकर निचोड़ने पर निकलना चाहिए। मैंने काफी सारी आलू की पत्तियों को पानी भरे उल्टे जार में निचोड़ा और हवा इकट्ठी कर ली। काफी सारी हवा प्राप्त हुई। लेकिन यह लगभग साधारण हवा जैसी ही थी।

“मैंने यह प्रयोग कई पत्तियों के साथ किया और जो हवा मिली वह साधारण हवा से भी बदतर थी।”

इस तरह से उन्होंने साबित कर दिया कि जो ऑक्सीजन एकत्रित होती है वह पानी से नहीं, पत्तियों से आती है और यह भी साबित कर दिया कि यह ऑक्सीजन पत्तियों में भरी हुई नहीं रहती बल्कि उनकी किसी क्रिया की वजह से निकलती है। और इस क्रिया के लिए सूरज का प्रकाश ज़रूरी है। मगर चार्ल्स बोनेट का ख्याल था कि वास्तव में धूप की गर्मी से हवा फैलती है जिससे बुलबुले बड़े होकर दिखते हैं। इंगेनहोज़ ने अगले प्रयोग इसी को लेकर किए।



“यदि पत्ती से हवा इसलिए निकलती है कि वह पानी के गर्म होने से फैल जाती है, तो किसी पत्ती को धूप में गर्म करके एकदम से ठण्डे पानी में रखने पर हवा के बुलबुले तब तक नहीं निकलने चाहिए जब तक कि पानी को गर्म न किया जाए। लेकिन होता इससे उल्टा है – धूप में गर्म हुई पत्ती को ठण्डे पानी में रखने पर तुरन्त हवा के बुलबुले बनते हैं और बढ़िया ऑक्सीजन इकट्ठी हो जाती है।

“यदि सूर्य के प्रकाश की बजाय गर्मी से यह क्रिया होती, तो पानी को आग पर गर्म करके भी ऑक्सीजन निकलनी चाहिए। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं होता।

“मैंने कुछ पत्तियाँ पानी भरे उल्टे जार में रखीं और इसे आग के पास रख दिया जिससे उसे हल्की गर्मी मिल सके। साथ ही मैंने उसी पौधे की कुछ पत्तियों को पानी भरे उल्टे जार में रखकर धूप में रख दिया। नतीजा यह रहा कि गर्मी से जो हवा मिली वह बहुत खराब थी जबकि धूप में मिली हवा शुद्ध ऑक्सीजन थी।”

तो इंगेनहोज़ ने सरल लेकिन सटीक प्रयोगों से यह सिद्ध कर दिया कि पत्तियाँ सूर्य के प्रकाश (गर्मी नहीं) में ही हवा को शुद्ध करती हैं। इसके आगे का किस्सा बहुत रोचक है। इंगेनहोज़ उस समय के वैज्ञानिक थे जब प्रयोग करना चीज़ों को समझने की एक प्रमुख विधि बनकर उभर रहा था। लोग पूछने लगे थे कि जो कुछ भी होता है वह कैसे होता है। इससे पहले एक बड़ा युग बीता था जब लोग पूछते थे कि कोई चीज़ क्यों है। इन दोनों में बड़ा अन्तर है। जब हम पूछते हैं कि कोई चीज़ है तो क्यों है, या कोई घटना हुई तो क्यों हुई, तो हम यह जानने की उम्मीद करते हैं कि उस चीज़ या उस घटना का उद्देश्य क्या है।

जैसे यदि हम सवाल करें कि दिन-रात क्यों होते हैं तो आजकल उसके जवाब में यह कहा जाएगा कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है। मगर इसका एक जवाब यह भी तो हो सकता है कि दिन-रात होते हैं ताकि हम सो सकें और जाग सकें।

इंगेनहोज़ दो ज़मानों के संधिकाल पर खड़े थे। एक और तो वे प्रयोगों के माध्यम से यह समझने को उत्सुक थे कि पत्तियों से हवा के बुलबुले कैसे निकलते हैं, कौन-सी क्रियाएँ,



चित्रः कनक

कौन-से बल इसके लिए ज़िम्मेदार हैं। दूसरी ओर, वे इस सवाल का जवाब भी पाना चाहते थे कि पत्तियाँ ऐसा क्यों करती हैं। उन्हीं के शब्दों में,

"*सम्भव है कि पत्तियाँ एक से ज़्यादा उद्देश्यों की पूर्ति करती हों। इतने विशाल उपकरण के बारे में यह तो नहीं माना जा सकता कि वह सिर्फ पेड़-पौधों के ृंगार या पोषण के लिए, उसकी वृद्धि के लिए, उसके फलों को पकाने के लिए या किसी अन्य इकलौते मकसद से बनाई गई होंगी। सम्भव है कि वे पेड़ की वृद्धि में सहायक हों, क्योंकि पत्तियों से वंचित पेड़ पर सड़ने का खतरा रहता है। यदि पेड़ से अधिकांश पत्तियाँ तोड़ दी जाएँ, तो उसके फल कमज़ोर रह जाते हैं और सारी पत्तियाँ तोड़ दें, तो फल सड़ जाते हैं। यह भी सम्भव है कि पत्तियाँ नमी को सोखकर पेड़ की मदद करती हों क्योंकि देखा गया है कि समय-समय पर पत्तियों और तने को सींचना लाभदायक होता है।*"

मगर इंगेनहोज़ का ख्याल था कि इतना पर्याप्त नहीं है। अपने प्रयोगों से उन्होंने दर्शा ही दिया था कि पेड़-पौधे इतनी सारी फ्लॉजिस्टनरहित हवा पैदा करते हैं। आगे वे कहते हैं:

"*हवा हमें नज़र नहीं आती। अगर आती तो हम शायद देख पाते कि पौधे भी जन्तुओं की तरह एक तरह का श्वसन करते हैं और पत्ते इसके अंग हैं; शायद उनमें ऐसे छेद हैं, जिनमें से वे हवा सोखते हैं और कुछ छेद ऐसे हैं जिनमें से वे हवा छोड़ते हैं। और वे फ्लॉजिस्टनरहित हवा को बाहर फेंकते हैं क्योंकि वह उनके लिए ज़हरीली है। हम शायद यह भी देख पाते कि पत्तों में हवा सोखने वाले छेद ऊपर की ओर और हवा छोड़ने वाले छेद निचली सतह पर हैं।*

"*तो क्या यह सम्भावना नहीं है कि पत्तियों की निचली सतह इसी उद्देश्य से बनाई गई है? इसी की बदौलत फ्लॉजिस्टनरहित हवा लगातार नीचे की ओर आएगी जो जन्तुओं के लिए बहुत लाभदायक होगा। और इस अनुमान को इस बात से भी बल मिलता है कि फ्लॉजिस्टनरहित हवा साधारण हवा से भारी होती है और नीचे बैठती है।*"

गौरतलब है कि इंगेनहोज़ यह भूल गए (या शायद उन्हें पता ही नहीं था) कि "गन्दी हवा" यानी कार्बन डाईऑक्साइड साधारण हवा से कहीं ज़्यादा भारी होती है। उनकी यह अटकल भी सही नहीं थी कि पत्तियों में दो तरह के छेद होते हैं। यह सही है कि पत्तियों के छेद (स्टोमेटा) निचली सतह पर ज़्यादा होते हैं।

कुल मिलाकर इंगेनहोज़ ने कई प्रयोगों के माध्यम से स्पष्ट कर दिया कि पत्तियों में सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में कोई क्रिया होती है, जिसमें फ्लॉजिस्टनरहित हवा (ऑक्सीजन) पैदा होती है और पत्तियाँ पौधों के पोषण के लिए ज़रूरी हैं। मगर वे यह भी मानते थे कि पत्तियों के अस्तित्व का मूल मकसद हवा को साफ करना है और उनकी पूरी संरचना ही इस हिसाब से बनी है ताकि शुद्ध हवा जन्तुओं को मिल सके। वे यह भी मानते थे कि ऑक्सीजन व कार्बन डाईऑक्साइड के घनत्व ईश्वर ने सोच-समझकर इस तरह बनाए हैं कि जन्तुओं को श्वसन में परेशानी न हो। ज़ाहिर है कि इंगेनहोज़ दो युगों की दहलीज़ पर खड़े थे।



शिवनारायण गौर

गणेश मामा

गणेश मामा का पूरा नाम यूँ तो गणेश प्रसाद लखेरा था पर लोग उन्हें गणेश मामा के नाम से ही पुकारते थे। सफेद बण्डी और पट्टे वाली घुटने तक लम्बी चड्डी पहने वे गाँव की गली-गली छान डालते। उनके गाने की आवाज़ सुनने वाला कह उठता – अरे, गणेश मामा आ रहे हैं।

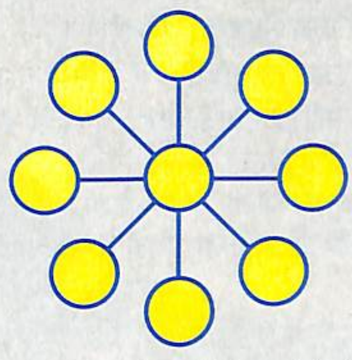
गणेश मामा की चूड़ियों की दुकान थी। वे गाँव-गाँव चूड़ी बेचने भी जाते। हाटों में मामा की दुकान भी सजती। क्या बच्चे, क्या तो बड़े-बूढ़े, वे जहाँ जाते उन्हें लोग घेर लेते और फिर शुरू होता गाना-बजाना। लोग फरमाइशें करते जाते और मामा उन्हें पूरी करते जाते। वे हर गाने को डूब कर गाते थे। पूरी शिद्दत से। हालाँकि लोग गाने से ज़्यादा उनके वाद्य पर फिदा होते थे।

मामा का वाद्य यंत्र अनूठा था। उनका खुद का बनाया हुआ। उसे वे पुंगी कहा करते। पुंगी को बनाने का उनका तरीका बड़ा अनेखा था। पुंगी बनाने के लिए धागे की खाली रील (गिट्टी) की ज़रूरत पड़ती। वे दर्ज़ियों से खाली रीलें जुटाते रहते। रील के एक सिरे पर एक झिल्ली-सी चिपकाते। यह झिल्ली दरअसल एक कीड़े द्वारा छोड़े गए द्रव्य के सूखने से बनती है। इस तरह बनी पुंगी के एक सिरे से फूँकने पर वह बाँसुरी की तरह बज उठती। पुंगी के साथ वे अपनी आवाज़ मिलाने की भी पूरी कोशिश करते। अगर कोई कहता कि पुंगी अच्छी है तो वे उसे ही दे देते और जेब से दूसरी निकाल लेते। जेब में आठ-दस पुंगी लेकर ही वे घर से निकलते। यदि गाँव से बाहर जाना हो तो यह संख्या बढ़ानी भी पड़ती। जाने कब, कौन और कहाँ पुंगी माँग ले!

एक बार किसी ने उनसे कह दिया कि मामा तुम तो पुंगी बनाने के लिए कीड़ों के घर तोड़ देते हो! मामा ने उस दिन से झिल्ली से तौबा कर ली। और उसकी जगह अब वे बीड़ी का नरम कागज़ लगाते। अब खाली रीलों के साथ-साथ वे बीड़ी के खाली बण्डल के कागज़ भी ढूँढने लगे थे। उनकी बण्डी के जेब पुंगी और बीड़ी के कागज़ों से भरे रहते। अगर कोई मामा को चिढ़ाने लगता तो वे गुस्सा हो जाते। और मामा गुस्सा होते तो समझो चिढ़ाने वाले की खैर नहीं। पर समझाने पर वे झट से मान भी जाते। वे गाना गा देते तो लोग समझते कि हाँ, मामा अब गुस्सा नहीं हैं। मामा घुड़सवारी के भी शौकीन थे। उनके घर में एक घोड़ी थी। इसी घोड़ी से मामा गाँव-गाँव चूड़ी बेचने जाते थे।

मामा आज इस दुनिया में नहीं हैं पर गणेश मामा और उनके गाने-बजाने को आज भी लोग बहुत याद करते हैं।

माथापच्ची



इस चित्र में हर सीधी रेखा में तीन गोले हैं। तुम्हें उनमें 4 से 12 तक की संख्याएँ भरनी हैं। संख्याएँ इस तरह भरनी हैं कि हर सीधी रेखा के तीनों गोलों का जोड़ 21 हो।



दो सीधी रेखाएँ खींचकर इस गोले को तीन भागों में बाँटो। हरेक भाग की संख्याओं का जोड़ बराबर होना चाहिए।

अमिया

प्रभात

"अमिया चलो स्कूल का काम करो।" माँ ने आवाज़ लगाई।

"पहले दो बजे तक खेल लूँ।" आवाज़ के जवाब में अमिया ने भी आवाज़ लगा दी।

"पहले इधर आ।" माँ ने फटकारते हुए कहा।

"पहले खेल।" अमिया ने भी वैसा ही जवाब दिया।

"बहुत सिर चढ़ गई है तू।" माँ ने डाँटा।

"नहीं, मैं दीवार पर चढ़ रही हूँ।" अमिया ने माँ की बात को काटा और दीवार पर चलते हुए आई।

"कल क्या कहा था तूने कि आते ही पहले स्कूल का काम करेगी फिर खेलने जाएगी।" माँ ने याद दिलाया।

"तो कल से करूँगी न।" अमिया ने कहा।

"आज हो गया कल।" माँ ने कहा।

"कल आज ही कैसे हो सकता है। कल तो कल ही होगा।" अमिया ने घुमाया।

"गए कल का कल आज है।" माँ बोली।

"आज है, पर कल तो नहीं है न।" अमिया ने और घुमाया।

"अब ज़्यादा मेरा सिर मत चाट। चुपचाप काम कर ले।" माँ ने बस्ता थमाते हुए कहा।

अमिया ने बस्ता खोला, काम देखा। दस विलोम शब्द लिखकर लाने हैं। माँ से कहा, "मुझे विलोम शब्द लिखने हैं। लिखाओ।"

"लिख ले तू। मैं क्या लिखाऊँ।" माँ कम पढ़ी-लिखी थी। और जो पढ़ा था उसे भी अब भूल गई थी।

"विलोम शब्द क्या होते हैं।" अमिया चिल्लाई।

"मुझसे क्या पूछती है? तेरी मास्टरनी ने नहीं बताया क्या?" माँ ने कन्नी काटी।

"नहीं बताया। लिखा दिया बस कि दस विलोम शब्द लिखने हैं।" अमिया खीजी।

"तो तू लिख ले।" माँ को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे?

"क्या लिख लूँ? बता दो वरना मैं चली खेलने।" अमिया ने धमकी दी।

"अरे लिख ले – छोटा-छोटी, मोटा-मोटी, बकरा-बकरी, ऐसे लिख ले जा।" माँ ने कपड़े पछीटते हुए कहा।

"ये विलोम शब्द हैं क्या?" अमिया को शक हुआ।

"ये नहीं होंगे तो वो ठीक करा देगी।" माँ ने टंटा खत्म किया।

"ठीक है, मैं लिख रही हूँ। पर ये तो तीन ही हुए।" अमिया ने कहा।

"बाकी तू सोचकर लिख ले।" माँ ने कपड़े निचोड़ते हुए कहा।

"लिख लूँगी पर गलत हुए तो कह दूँगी तुमने बताए थे।" अमिया ने चेताया।

"कह देना। मेरा क्या करेगी वो मुई। बच्चों को बताती तो है नहीं। काम दे देती है हमारी जान खाने।" माँ ने तार पर कपड़े डालते हुए कहा।

अमिया ने कॉपी में बाकी के सात शब्द और उनके विलोम झटपट लिख लिए। और खेलने चली गई।

अगले दिन कक्षा में अध्यापिका ने अमिया की कॉपी में



बेजिंग ऑलम्पिक ने शैली अन फ्रेज़र को दुनिया की सबसे तेज़ दौड़ाक बना दिया है। वे जमैका की रहने वाली हैं। शैली ने यह कमाल कड़े प्रशिक्षण के बलबूते पर नहीं किया। अपनी माँ के साथ तंग और बदहाल बस्ती में रहने वाली शैली के लिए तेज़ दौड़ना मजबूरी थी। शैली की माँ अपना परिवार चलाने के लिए सड़क किनारे ठेला लगाती थीं। सड़क किनारे ठेले लगाने वालों को हमेशा पुलिस पर नज़र रखनी होती है। शैली को भी पुलिस के आते ही फुर्ती से सामान समेट तेज़ी से भागना होता था। और बचपन की यह दौड़ शैली के इस तरह काम आई। इस कामयाब एथलीट का परिवार आज भी जमैका की एक बेहद तंग बस्ती में किराए के मकान में रहता है।

विलोम शब्द देखे। लिखा था, "छोटा-छोटी, मोटा-मोटी, बकरा-बकरी, कमरा-कमरी, चूला-चूली, झूला-झूली, मूला-मूली, दूल्हा-दूल्ही, माथा-माथी, कट्टा-कट्टी।"

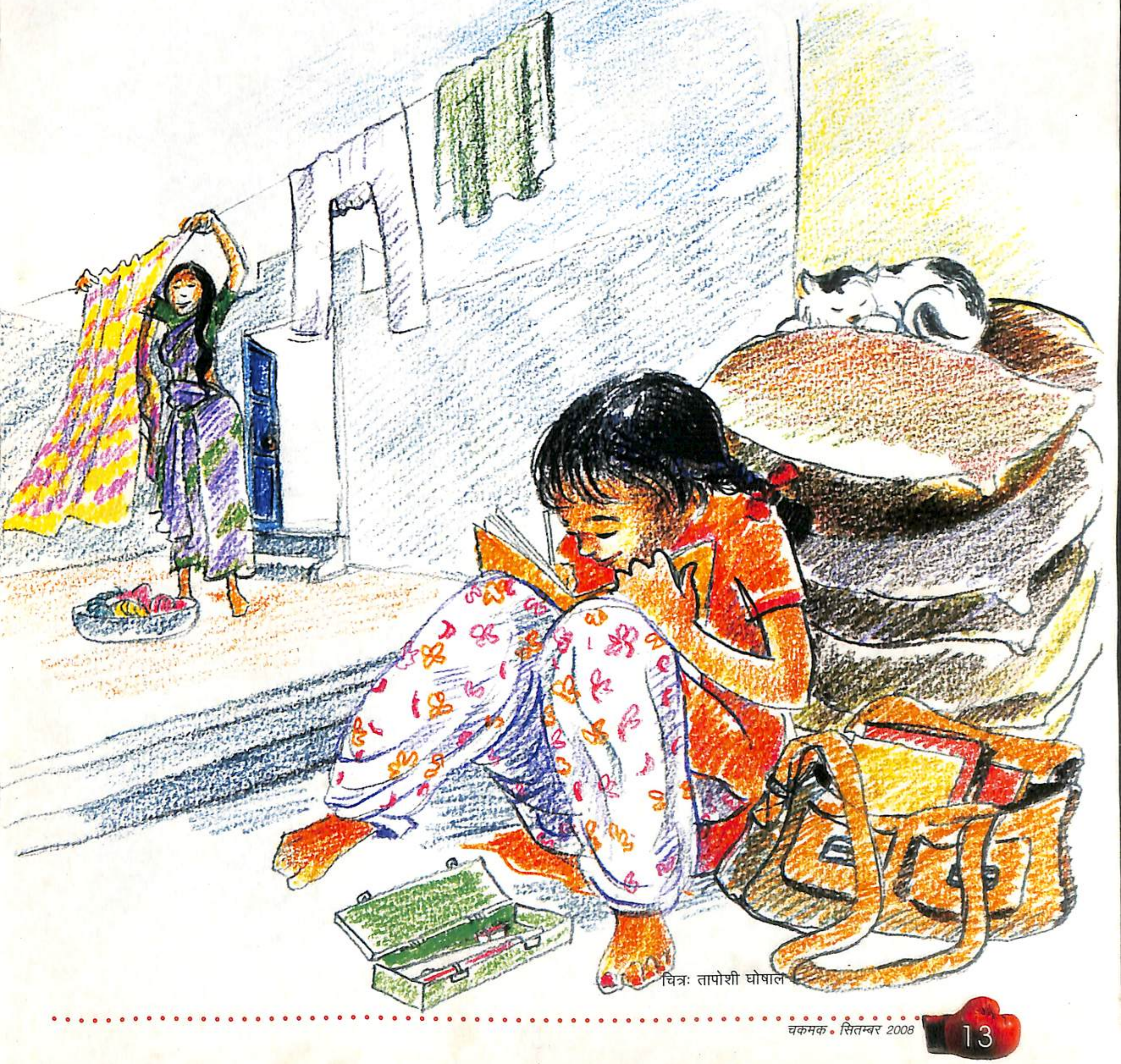
"यह क्या है ?" अध्यापिका ने अमिया के सिर पर कॉपी फेंककर कहा।

"विलोम शब्द।" कहते हुए अमिया की आँखें छलछला गईं। अध्यापिका ने भरी कक्षा में कॉपी फेंककर उसे अपमानित किया था।

"किसने बताए ऐसे?" अध्यापिका ने पूछा।

"किसी ने नहीं बताए। मैंने ही लिखे हैं।" अमिया नहीं चाहती थी कि अध्यापिका को पता चले कि उसकी माँ को विलोम शब्द भी नहीं आते। उसे पता था कि माँ विलोम शब्द नहीं जानती तो क्या हुआ, उसे प्यार से रखना तो जानती है।

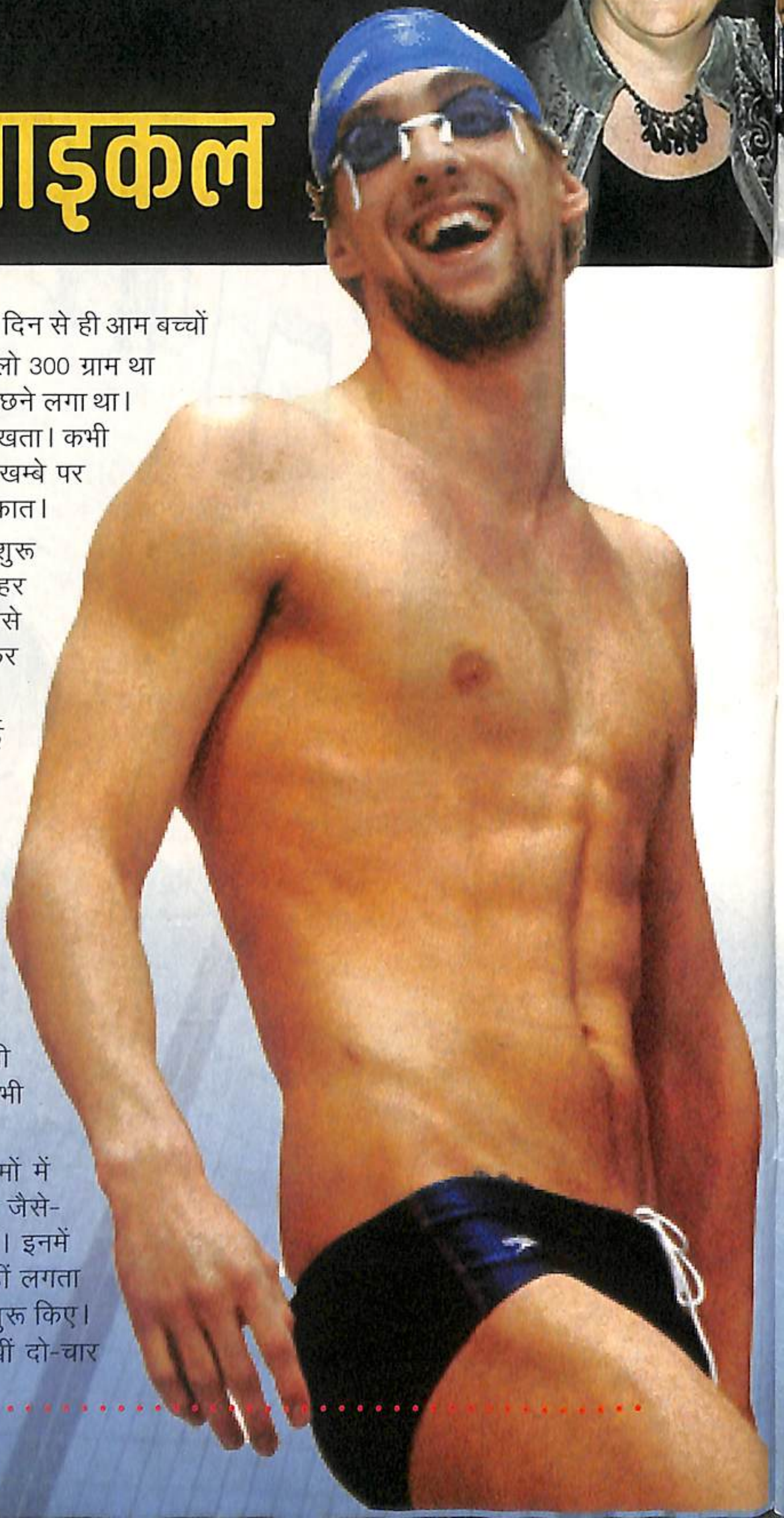
अमिया ने कॉपी समेटकर बस्ते में रखी और चुपचाप बैठ गई।



चित्रः तापोशी घोषाल



'माँ' से माइकल

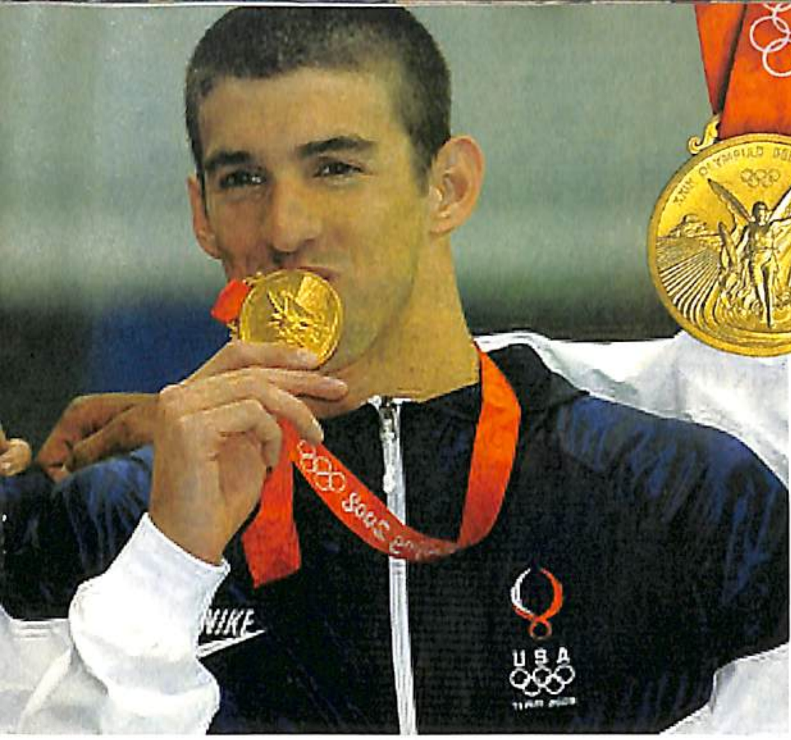


मेरा यानी डेबोरा फैल्प्स का तीसरा बच्चा माइकल पहले दिन से ही आम बच्चों से कहीं बड़ा था। पैदा हुआ तो उसका वज़न लगभग 4 किलो 300 ग्राम था और लम्बाई थी 23 इंच। छुटपन से ही मुझसे लाखों सवाल पूछने लगा था। सबका ध्यान उसी की ओर रहे इसका वो पूरा-पूरा ख्याल रखता। कभी अपनी तीन-पहिया साइकल पर झूलता, कभी कसरत वाले खम्बे पर लटकता, उलटबाज़ियाँ लगाता। हर वक्त कोई न कोई खुराफात।

उसके स्कूल जाने के साथ ही टीचरों की शिकायतें आना शुरू हो गईं। "चुपचाप नहीं बैठता, टिक कर कुछ नहीं करता, हर कभी खी..खी..करने लाता हँसता रहता है। इसके हाथ तो जैसे इसके पास रहते ही नहीं। बच्चों को कोहनी मार-मारकर उनका ध्यान अपनी ओर लगाए रहता है।"

जब थोड़ा और बड़ा हुआ तो माइकल के नए स्कूल की नई टीचरों के पैगाम आने लगे। "बड़ा ही बचकाना बर्ताव है इसका। किसी भी चीज़ में इसका ध्यान ही नहीं लगता।" मैं खुद टीचर हूँ और पिछले 22 सालों से पढ़ा रही हूँ। मुझे लगा कि इसका कारण कुछ और भी हो सकता है। जैसे अभी-अभी हम नई जगह में आए हैं और यहाँ वही सब पढ़ाया जा रहा है जो माइकल पहले ही पढ़ चुका है। हो सकता है, क्लास में वो बोर हो जाता हो। मैंने यह बात उसकी टीचर को बताई। इस पर टीचर बोली, "ओह, वो इतना भी अक्लमन्द नहीं! तुम्हारा बेटा, कभी भी किसी भी चीज़ पर ध्यान लगा ही नहीं सकता।" यह बात ना मैंने कभी मानी और ना ही कभी भूली।

मिडिल स्कूल तक आते-आते माइकल को उन सब कामों में बड़ा मज़ा आने लगा था जिनमें हाथों से कुछ करने को था। जैसे- विज्ञान के प्रयोग। जिमनास्टिक्स भी उसे बहुत पसन्द था। इनमें उसने तरक्की भी खूब की। हाँ, पढ़ना उसे बहुत अच्छा नहीं लगता था। इसलिए मैंने उसे *बाल्टिमोर सन स्पोर्ट्स* के पन्ने देने शुरू किए। चाहे वो उसके केवल चित्र देखता और उसके साथ लिखीं दो-चार





लाइनें ही पढ़ता था। स्कूल में उसे कुछ B, कुछ C और कुछ D ग्रेड मिलते थे।

वो बड़ा मुश्किल समय था। मेरा तलाक हो रहा था। मैं पढ़ाई भी कर रही थी। और माइकल बड़ा हो रहा था। हाँ, कुछ अजीबोगरीब तरीके से। उसके कान खूब बड़े लगते और वो दौड़ता तो उसके हाथ घुटनों से नीचे लटकते। आज वो 6 फीट 4 इंच का है और हाथ फैलाए तो उनके बीच की दूरी 6 फीट 7 इंच होती है। बच्चे उसका मज़ाक बनाते।

जब वो पाँचवीं में था तो मेरे एक दोस्त डॉक्टर वैक्स ने कहा कि हो सकता है माइकल में कोई गड़बड़ी हो जिसकी वजह से वो किसी चीज़ में थोड़ी देर के लिए ही ध्यान लगा पाता है और बेहद चंचल है। इस बीमारी का नाम उन्होंने ADHD बताया। टीचर भी इस बात को झट से मान गए।



माइकल अपनी बहनों हिलैरी और विटनी के साथ (1988)

अब तक मेरे परिवार के सभी लोग तैरने में मज़ा लेने लगे थे। मेरी बड़ी बेटी अच्छी तैराक थी। डॉ. वैक्स के बच्चे भी तैरने जाते थे। माइकल स्विमिंग पूल के आसपास यूँ ही दौड़-बदमाशी में लगा रहता।

नौ साल की उम्र से उसे काबू में रखने के लिए दवा देनी शुरू की गई। इसका असर दिखा। अब वो बहुत ज़्यादा हिले-डुले बगैर अपना होमवर्क कर लेता था। उसे कुछ C ग्रेड B ग्रेड बनने लगे थे। लेकिन इतना तो अब भी था कि अगर उसे कम से कम चार वाक्य लिखने को कहा जाता तो वो चार ही वाक्य लिखता।

दो साल बीत गए। माइकल ने कहा, "अब मैं दवा नहीं लेना चाहता। मेरे दोस्त ऐसा नहीं करते। और मैं भी बिना दवा के अपना ध्यान लगा सकता हूँ।" मेरे घर में बच्चों के निर्णयों को माना जाता है। मैंने माइकल की बात मान ली।

अब तक माइकल की तैराकी का हुनर दिखने लगा था। उसका देश में 10वाँ स्थान था। मैं देखती कि जो बच्चा स्कूल का काम पूरा करने के लिए मुश्किल से बैठ पाता था, अब तैरने की पाँच मिनट की प्रतियोगिता के लिए चार घण्टों तक एक ही जगह पर बैठा रहता।

माइकल जब 11 साल का हुआ तो उसके तैराकी के कोच बॉब बोमैन बोले, "मैं देख सकता हूँ कि सन 2000 तक माइकल ऑलम्पिक में प्रवेश पाने की कोशिश करेगा। 2004 में वो ऑलम्पिक में भाग लेगा। 2008 तक कई वर्ल्ड रिकॉर्ड बना चुका होगा। 2012 ऑलम्पिक जो लन्दन में होगा उसमें...।" मैंने कहा, "बॉब बहुत हुआ। अब लौट चलो। अभी तो वो सिर्फ 11 साल का है। मिडिल स्कूल में है।"

अब मैं देखती हूँ तो पाती हूँ कि माइकल कोच की भविष्यवाणी से भी तेज़ चला। 15 साल की उम्र में उसने ऑलम्पिक में भाग लिया। 16 साल में पहला वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। 19 साल में 2004 ऑलम्पिक में 8 पदक जीते – जिसमें 6 सोने के थे।

जो बात मुझे सबसे ज़्यादा चकित करती है वो है माइकल का घड़ी जैसा दिमाग। अगर उसे 200 बटरफ्लाई करने हैं तो उसे पता होता है कि रिकॉर्ड तोड़ने के लिए उसे पहले 50 बटरफ्लाई 24.6 सेकण्ड में करने होंगे। और वो इस समय को जैसे दिमाग में सैट कर लेता है। और अपने शरीर से यह काम ठीक 24.6 सेकण्ड में करवा लेता है।

माइकल ने तैराकी का अपना होमवर्क हमेशा पूरा किया। हाई स्कूल में वो रात का खाना टीवी के सामने ही खाता। इस समय वो अन्तर्राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिताओं के टेप देख अपनी खामियाँ ढूँढ रहा होता था।

खैर, ये सारी बातें तो बीते दिनों की हैं। न जाने कितने ही लोगों ने वो सब देखा जो मेरा बेटा नहीं कर सकता था। आज सारा संसार वो सब देख रहा हो जो ADHD से पीड़ित मेरा बेटा कर रहा है। चक मक

साभार: न्यू यॉर्क टाइम्स, चित्र: इंटरनेट

अंकल टॉम को दिल की बीमारी थी। उनकी एक दूर की रिश्तेदार उनके लिए लाखों रुपया छोड़ गई। जब उसके घरवालों को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने सोचा कि ऐसा ना हो कि यह खबर सुनकर टॉम को दिल का दौरा पड़ जाए। इसलिए उन्होंने एक पादरी की मदद लेने की सोची। पादरी ने भरोसा दिलाया कि आप घबराएँ नहीं। मैं टॉम से बात कर लूँगा।

पादरी ने टॉम से कहा, "यदि तुम्हें कहीं से लाखों रुपए मिल जाएँ तो तुम क्या करोगे?"

टॉम ने जवाब दिया, "मैं उसका आधा हिस्सा आप को दे दूँगा।"

यह सुनते ही पादरी को दिल का दौरा पड़ गया।





एक आदमी ने देखा कि एक बन्दर मछली को पकड़कर पेड़ पर ले जा रहा था। उसने बन्दर से कहा, "यह तुम क्या कर रहे हो?"

बन्दर ने कहा, "मैं मछली को डूबने से बचा रहा हूँ।"

साभारः द सॉन्ग ऑफ बर्ड



चकरम

प्रभात

एक भाई अकरम
एक भाई विकरम
तारे तकते
करते फिकरम
क्या है चकरम
कम रहती है
दूध में शकरम



लट्टू

एक भाई मट्टू
एक भाई सट्टू
उनके घर में
दो दो लट्टू
एक चले जाए
एक जले जाए





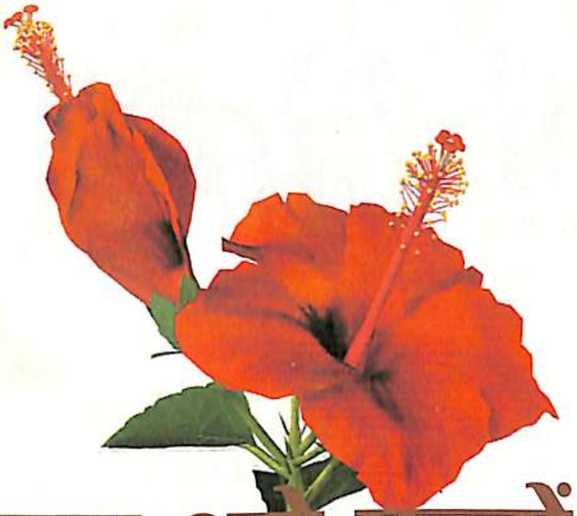
बल्लू टल्लू पल्लू

बल्लू गिर गया बल्ले से
टल्लू गिर गया टल्ले से
पल्लू किवाड़ के पल्ले से
बाकी गिर गए हल्ले से



ऐ

चूहेएएएएएएएएएएएए
किससे पूछ के खाए
तूने मेरे
पुएएएएएएएएएएएएए





चित्रः तेजी ग्रोवर

रस-भरे फूलों के रंग

तेजी ग्रोवर

जासौन का फूल या फिर गुड़हल या गुल्हड़। पूजा का सुन्दर लाल फूल और बन्दरों का प्रिय आहार। अभी कुछ दिन पहले दो-तीन लँगूरों ने हमारे घर के पास वाले जड़ी-बूटी उद्यान में खूब मौज़-मस्ती की। सब-के-सब जासौन उनके पेट में उतर गए। कुछ दिनों बाद जब फूल दोबारा दिखने लगे तो मैं समझ गई कि लंगूरों को निकाल दिया गया है।

तितलियाँ और शकरखोरे भी इस फूल को बहुत चाहते हैं। मधुमक्खियाँ भी जासौन के रस का मज़ा लेती हैं। इसलिए मैं ताज़े फूलों से रंग नहीं बनाती। मैं गिरे हुए फूलों को चुनती हूँ। होशंगाबाद में मेरे सभी पड़ोसी देवी की पूजा फूलों से करते हैं। फिर वे गेंदे, गुलाब, चाँदनी और जासौन को नदी में सिरा देते हैं। लेकिन अब ये सब-के -सब फूल पूजा के बाद मुझे मिल जाते हैं।

मुझे जासौन का रंग कैसे मिला, जानते हैं? मैंने एक दिन कोई बीस-पच्चीस जासौन के फूलों में नींबू का रस डाला। फिर उन्हें थोड़े से पुदीने और ज़रा-सी फिटकरी के साथ उबाल लिया। नींबू और पुदीने से रंग गाढ़ा होता है, और फिटकरी से पक्का। जासौन से मैंने कई चित्र बनाए। उनमें से एक वो ऊपर कोने में है।

इस बीच भोपाल की एक चित्रकार संजू जैन ने अपना काफी काम प्राकृतिक रंगों से ही किया है। खासतौर से अनार के छिलके और हल्दी के रंगों से संजू ने बहुत से चित्र बनाए हैं। कैनवास पर हल्दी-मिली मुल्तानी मिट्टी और पुराने कागज़ों से बने कागज़ को चिपकाकर और अनार के छिलके के कई रंग बनाकर संजू ने बहुत सुन्दर चित्र बनाए हैं। उनका यह चित्र खास चकमक के लिए है।



चित्रः संजू जैन

बेनज़ीर भुट्टो

जब मैं आखिरी बार अब्बा से मिली



बेनज़ीर हमारे जुड़वाँ और पड़ोसी देश पाकिस्तान की प्रधानमंत्री रही हैं। दो बार! बीते 27 दिसम्बर को उनकी हत्या हुई। बेनज़ीर के पिता जुल्फिकार अली भुट्टो भी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति रहे हैं। 1979 में उन्हें वहाँ के सैन्य शासन ने फाँसी की सज़ा दे दी। बेनज़ीर ने अपने अब्बा से आखिरी मुलाकात को अपनी आत्मकथा - *डॉटर ऑफ डेस्टिनी* में याद किया है। यहाँ इस किताब का एक अंश प्रस्तुत है...

जूनियर जेलर के सामने मैं बेबाक खड़ी थी। मेरे हाथों में पिता की बची-खुची चीज़ों का थैला था। उनके कपड़ों से अब भी उनके कोलोन की खुशबू आ रही थी। शालीमार कोलोन की खुशबू। मैंने उन कपड़ों को गले लगा लिया। कई रातों तक मैंने अब्बा को अपने साथ रखने की कोशिश की, उनकी कमीज़ को अपने तकिए के नीचे रखकर।

पिछले दो बरसों से ज़िया का सैनिक शासन मेरे पिता पर तरह-तरह के इल्ज़ाम लगा रहा था। मुझे चुनाव लड़ने से रोका गया था। दो बरसों में छह बार मुझे गिरफ्तार किया गया था और अनगिनत बार लाहौर और कराची में पैर रखने की भी मनाही की थी। मेरी माँ को नज़रबन्द कर लिया गया था और अब्बा तो जेल में थे ही।

वह दूसरी अप्रैल 1979 की सुबह थी। मैं नींद से जागी भी नहीं थी। अचानक माँ मेरे कमरे में आईं, "पिंकी!" उन्होंने मुझे हमारे घर के नाम से पुकारा। उनकी आवाज़ में थरथराहट थी। मैं भी काँप गई। माँ ने कहा, "पिंकी, लश्करी अफसर आया है। कह रहा है कि आज हम दोनों को तुम्हारे अब्बा से मिलने जाना है। क्या मतलब...?"

उसका मतलब मैं भी जानती थी और अम्मी भी। पर खुलकर बोलने का साहस हम दोनों में नहीं था। आज तो माँ की बारी थी। अब्बा से मेरी मुलाकात तो इस हफ्ते के अन्त में होने वाली थी। अफसर ने हम दोनों को एक साथ आने को कहा है। इसका एक ही मतलब था – यह हमारी आखिरी मुलाकात थी। मेरे अब्बा की हत्या होने वाली थी।

मेरा दिमाग एक पल के लिए सुन्न हो गया और फिर तेज़ी से दौड़ने लगा। मैं पाकिस्तान की अवाम (जनता) को और सारी दुनिया को आखिरी आवाज़ लगाना चाहती थी कि वे मेरे अब्बा को बचा लें। मैंने फौरन अम्मी से कहा, "उस अफसर से कह दो कि मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है। अगर यह आखिरी मुलाकात है तो मैं आऊँगी, पर अगर ऐसा नहीं है तो हम अब्बा से अलग मिलेंगे।"

अम्मी अफसर से बात करने चली गईं। मैंने फौरन एक कागज़ ढूँढ़कर अपनी एक सहेली के लिए खत लिखा। "शायद अब्बा के साथ यह हमारी आखिरी मुलाकात है।" मुझे उम्मीद थी कि चिट्ठी पढ़कर वह पार्टी के नेताओं तक मेरी खबर पहुँचाएगी और वे अवाम को जगाएँगे। आखिर अवाम ही तो हमारी आखिरी उम्मीद थी।

"इसे फौरन यास्मीन तक पहुँचा दो।" मैंने अपने एक विश्वसनीय सेवक इब्राहीम से कहा। यह एक बड़ा खतरा था। सिपाही उसकी तलाशी ज़रूर लेता और अगर वह पकड़ा जाता तो सब की मौत तय थी। पर जितना बड़ा खतरा था उतनी बड़ी उम्मीद भी तो थी।

"जाओ, इब्राहीम।" मैंने उससे कहा, "चौकीदार से कहना कि तुम मेरे लिए दवाइयाँ खरीदने जा रहे हो।"

अफसर मेरी बीमारी की खबर को वायरलेस से भेजने और उसके जवाब के इन्तज़ार में उलझा हुआ था। इब्राहीम गेट पर पहुँचा, "मुझे बेनज़ीर साहिबा के लिए दवाइयाँ लानी हैं।" उसने चौकीदार से कहा। चौकीदार पहले ही मेरी बीमारी के बारे में सुन चुका था। उसने इब्राहीम को जाने दिया। इधर मेरे हाथ-पैर ठण्डे पड़ गए थे। डर था कहीं चौकीदार कोई परची माँग लेगा, तो?

वायरलेस पर जवाब आया। अफसर ने अम्मी से कहा, "बेनज़ीर की तबीयत ठीक नहीं है इसलिए आप कल मुलाकात कर सकते हैं।" और इस तरह मेरे अब्बा को चौबीस घण्टे और ज़िन्दा रहने की इजाज़त मिली।

हमें मुकाबला करना चाहिए। पर कैसे? मैं यहाँ नज़रबन्द थी और अब्बा वहाँ जेल में। मेरे अब्बा की ज़िन्दगी सिकुड़ती जा रही थी।

शाम को बड़ी बेचैनी से बी.बी.सी. एशिया सुना। मेरी जान जैसे गले में अटकी थी। मुझे उम्मीद थी कि मेरी चिट्ठी का

कोई तो जवाब मुझे मिलेगा। पर रेडियो पर ऐसा कुछ भी नहीं आया। मैं और अम्मी रो पड़े।

दूसरे दिन एक जीप आकर हमें रावलपिण्डी जेल ले गई। हम दोनों को एक साथ देखकर अब्बा भी ज़रा-सा चौंक गए, "आप दोनों आज एक साथ?"

अम्मी चुप रहीं।

"क्या यह आखिरी मुलाकात है?" उन्होंने पूछा।

अम्मी कुछ बोल न पाईं।

"ऐसा ही लगता है।" मैंने कहा।

उन्होंने जेल सुपरिटेंडेंट की ओर देखा। वे वहीं खड़े थे। हमें अब्बा से अकेले में मिलने की इजाज़त नहीं थी। अब्बा ने पूछा, "क्या यह हमारी आखिरी मुलाकात है?"

"हाँ।" कुछ हिचकिचाते हुए जेल सुपरिटेंडेंट ने कहा।

"कब?"

"कल सुबह, पाँच बजे। जेल के कायदे से।"

"मेरे परिवार के साथ मुझे कितना वक्त मिलेगा?"

"आधा घण्टा।"

"एक घण्टा देने का नियम है।"

"मुझे आधा घण्टा देने का आदेश मिला है।" एक खामोशी के बाद अब्बा ने उनसे कहा, "मेरे लिए नहाने और शेविंग का इन्तज़ाम करना। इस खूबसूरत दुनिया से मैं साफ-सुथरा होकर विदा होऊँगा।"

आधा घण्टा। मेरी ज़िन्दगी के सबसे अहम इन्सान के साथ आखिरी आधा घण्टा! मेरे सीने में दुःख उमड़ आया। मैं रोना नहीं चाहती थी। मुझे टूटता देख अब्बा को भी तो दुख होता।

वे ज़मीन पर बिछे एक कपड़े पर बैठे थे। उन लोगों ने अब्बा के टेबल-कुर्सी और चारपाई हटा लिए थे।

अब्बा ने मुझे कुछ किताबें और पत्रिकाएँ दीं। इन्हें मैं ही कभी उनके लिए लाई थी। "मैं नहीं चाहता ये लोग मेरी चीज़ों को हाथ लगाएँ।" उन्होंने मुझे अपनी बची हुई कुछ सिगार भी दीं। फिर एक सिगार वापस ले कर बोले, "यह आज रात के लिए।" उन्होंने शालीमार कोलोन की एक शीशी भी अपने पास रखी। फिर वे अपनी अँगूठी निकालने लगे, अम्मी ने कहा, "मत निकालिए।"

"ठीक है, अभी नहीं निकालता, पर मेरी मौत के बाद इसे बेनज़ीर को देना।" उन्होंने अम्मी से कहा।

मैंने दबी आवाज़ में उनके कान में कहा, "मैंने सन्देशा भेजने की कोशिश की है।" उन्होंने प्यार से मेरी ओर देखा। उनकी यही ख्वाहिश थी कि मैं राजनीति के दाँव-पेंच सीख जाऊँ।

अब्बा ने अम्मी से कहा, "बच्चों को मेरी ओर से ढेर सारा प्यार देना। उन्हें बताना कि मैंने अच्छा पिता बनने की कोशिश की है। काश, मैं अपने सारे बच्चों को अलविदा कह पाता।"

अम्मी ने सिर हिला दिया, पर कुछ बोल न पाईं। अब्बा ने कहा, "तुम दोनों ने बहुत सहा है। अब जब वे मुझे मार ही डालने वाले हैं तब मैं तुम दोनों को भी आज़ाद कर देना चाहता हूँ। तुम दोनों चाहो तो पाकिस्तान छोड़ सकते हो। वैसे भी यहाँ तो सैनिक शासन है। तुम लोग आज़ादी और चैन चाहते हो तो यूरोप जा सकते हो।"

हम दोनों तड़प उठे। अम्मी ने कहा, "हम नहीं जाएँगे। हम कभी नहीं जा सकते। जनरल को यह नहीं लगना चाहिए कि वे जीत गए। चुनाव होने वाले हैं। अगर हम चले गए तो आपने जिसकी नींव डाली है उस पार्टी का नेता कौन होगा?"

"पिंकी, तुम्हारा क्या कहना है?" अब्बा ने मेरी ओर देखा।

"मैं? मैं तो जा ही नहीं सकती।" मैंने कहा।

अब्बा मुस्कराए, "मैं बहुत खुश हूँ। तुम्हें पता नहीं, तुम मुझे कितनी प्यारी हो। हमेशा से तुम मेरा अनमोल हीरा हो।"

"वक्त पूरा हो गया।" सुपरिटेंडेंट ने कहा। मैंने सलाखों को अपनी मुट्ठी में कस लिया। "दरवाज़ा खोलो, प्लीज़ मुझे अपने अब्बा से अलविदा कहने दो। मेरे अब्बा पाकिस्तान के निर्वाचित प्रधानमंत्री थे। मैं उनकी बेटी हूँ। यह हमारी आखिरी मुलाकात है। मैं उनका हाथ पकड़ना चाहती हूँ।"

सुपरिटेंडेंट ने "ना" कहा।

मैंने सलाखों के बीच अपने हाथ डालकर अब्बा तक पहुँचने की कोशिश की। वे मेरे पास आए और मेरे हाथों को छुआ। मलेरिया, बदहज़मी ने उन्हें कमज़ोर बना दिया था। अपने थके हाथों से मेरे हाथों को छूकर उन्होंने कहा, "अब मैं मुक्त हो जाऊँगा।" उनके थके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई।

"मैं अपने माँ-बाप से मिलूँगा। अपने पूर्वजों की ज़मीन पर, लरकाना लौट जाऊँगा। वहाँ की मिट्टी, वहाँ की खुशबू और हवाओं में मिल जाऊँगा। मेरे बारे में गीत लिखे जाएँगे। मैं वहाँ का हिस्सा बन जाऊँगा।" उन्होंने हँसते हुए कहा, "पर पिंकी, लरकाना में धूप बहुत तेज़ होती है।"

मैंने मुश्किल से कहा, "मैं वहाँ आपके लिए एक छत बाँधूँगी।" जेल का अफसर आ चुका था। उसने इशारे से हमें चले जाने का हुक्म दिया।

"अलविदा, अब्बा!" मैंने कहा। मेरी अम्मी उनका हाथ पकड़ने के लिए दौड़ीं पर अफसर ने उन्हें पकड़ लिया और हमें जेल से बाहर ले जाकर छोड़ दिया।

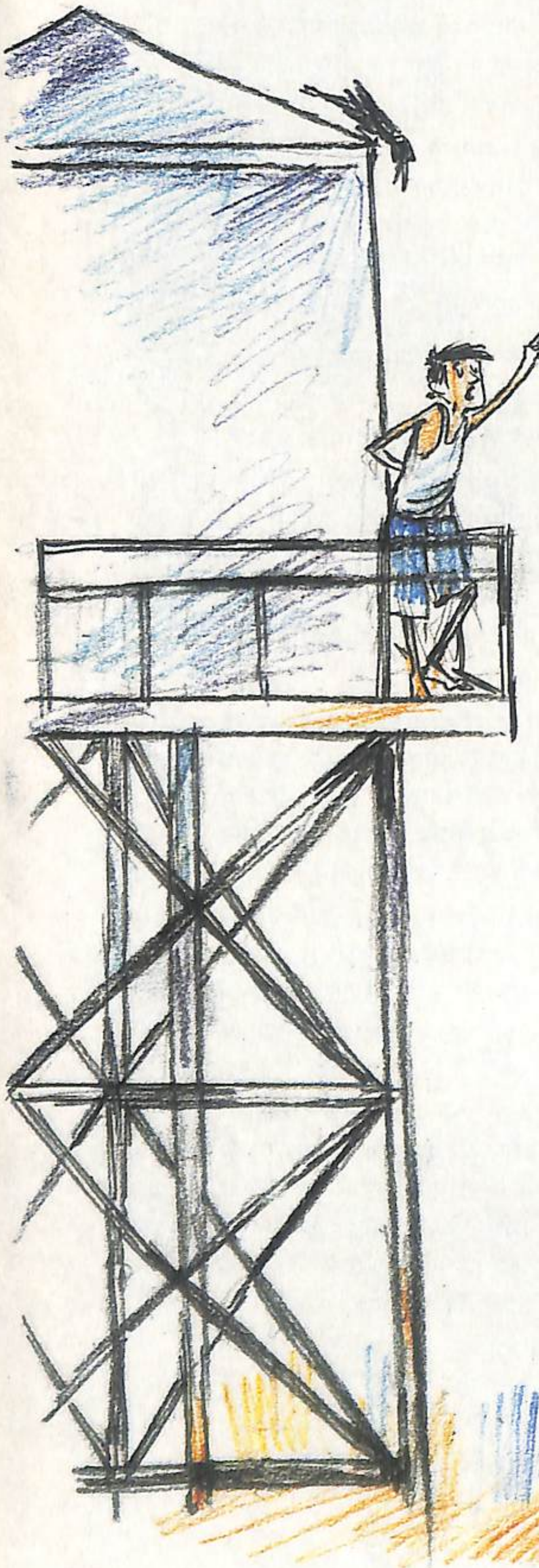
हम दोनों सड़क पर आ गए थे। हर पल मुड़कर देखने का मन कर रहा था, पर मैंने एक बार भी पलटकर नहीं देखा। अगर पलटती तो खुद को रोक नहीं पाती।

"अलविदा! हम फिर मिलेंगे। ज़रूर मिलेंगे।" दूर से अब्बा की आखिरी आवाज़ आई...।

साभार अनुवादः सोनल पारीख

स्वयंप्रकाश

प्यारे भाई रामसहाय,



एक बार हमारे शहर में नेहरूजी आए। जिस-जिस सड़क से नेहरूजी का काफिला गुज़रना था, सड़क के दोनों तरफ आदमी, औरतें, बच्चे उनकी झलक पाने के लिए सटे-सटे खड़े थे। और जिस मैदान में नेहरूजी का भाषण होने वाला था वह तो खचाखच भरा हुआ था। मैं भी बड़े मामाजी के साथ नेहरूजी का भाषण सुनने गया।

नेहरूजी क्या बोले यह तो मुझे पूरी तरह समझ में नहीं आया, लेकिन उनका भाषण देने का ढंग मुझे बड़ा अच्छा लगा। उनके कुछ जुमले मुझे सुनते-सुनते ही याद हो गए और कुछ शब्द तो जैसे दिमाग में अटक ही गए। जैसे एक शब्द था – गोया। "गोया हमें आज़ादी मिली।" "गोया हमें मिहनत (मेहनत नहीं) करनी है।" "गोया हमें देश को आगे बढ़ाना है।" यह गोया शब्द मुझे बड़ा अच्छा लगा। नेहरूजी के मुँह से तो और भी अच्छा लगा। अब इस "गोया" का मतलब क्या होता है, यह मुझे आज तक नहीं पता।

हम लोग एक बहुत बड़े मकान में रहते थे। मकान एक बाड़े में था। उसमें कुल पैंतीस परिवार रहते थे। बीच में सबके लिए एक बड़ा-सा साझा आँगन था। दूसरे दिन इस आँगन में खड़ा मैं चार-पाँच दोस्तों को नेहरूजी के भाषण के बारे में बता रहा था। साथ ही उनके भाषण की नकल कर रहा था। उन्हें मज़ा आया। वे बोले, "एक बार और बता।" फिर बोले, "ऐ इसने, गट्टू ने नहीं सुना, एक बार और बता।" धीरे-धीरे दस-पन्द्रह बच्चे इकट्ठा हो गए। मैं उन्हें नेहरूजी के भाषण की नकल उतारकर बताता रहा।

आँगन में एक बड़ी-सी टंकी थी। दोस्तों ने कहा, "इस पर चढ़कर बोल। मज़ा आएगा।" उन्होंने मुझे टंकी पर चढ़ा दिया। मैं और जोश से भाषण की नकल उतारने लगा। भाषण खत्म होने पर सबने बत्तीसी दिखाई और तालियाँ बजाईं। बजाईं क्या, उनसे बज गईं। इस बीच पन्द्रह-बीस छोटे-बड़े बच्चे और इकट्ठा हो गए थे। और बहुत से खिड़कियों-गैलरियों से भी झाँक रहे थे। फिर सुनाने की फरमाइश पर मैंने



नेहरूजी जैसा मुँह बनाकर, हाथ पीछे बाँधकर, अभिनय के साथ भाषण दोहराया। ज़ोरदार तालियाँ बजीं। अब तक कुछ बड़े लोग भी आ गए थे। जैसे-जैसे भीड़ बढ़ती गई मेरे भाषण में अभिनय की मात्रा भी बढ़ने लगी। और "गोया" का प्रयोग भी बढ़ने लगा।

> **मैं खूब अभिनय के साथ नेहरूजी के भाषण की नकल सुना रहा था। हाथ पीछे बाँधे ... कभी थोड़ा बाएँ घूमता ... कभी थोड़ा दाहिने... गोया... गोया कि हमें आज़ादी मिली...**

बच्चों को लगा कि जब हमें हमारा नेहरूजी मिल ही गया है, तो क्यों न इसकी सवारी निकाली जाए और इसे सम्मानपूर्वक अपने आँगन में लाया जाए। मुझे टंकी से उतारा गया। सब गली में गए। दो बच्चों ने मोटरसाइकिल का हैण्डल पकड़ने की मुद्रा में हाथ ताने और मुँह से ढुर्रर्र...र्र...र्र...की आवाज़ निकालते हुए आगे-आगे दौड़े। चार मेरे आजू-बाजू जीप के पहिए बनकर दौड़े, और दो मोटरसाइकिल वाले गार्ड पीछे। सबके बीच में मैं दौड़ा। यह काफिला गली के चार चक्कर लगाकर गेट पर आया। मैं भी कोई कम नहीं था। सबके बीच दौड़ते हुए मैं दोनों तरफ हाथ हिला-हिलाकर मुस्कुराता हुआ जनता का अभिवादन करता रहा। जनता नहीं थी। लेकिन उसे होना चाहिए था।

अब मैं बच्चों, आदमियों, औरतों से खचाखच भरे आँगन के बीचों-बीच टंकी पर खड़ा खूब अभिनय के साथ नेहरूजी के भाषण की नकल उतार रहा था। हाथ पीछे बाँधे ... कभी थोड़ा बाएँ घूमता ... कभी थोड़ा दाएँ...। गोया... गोया कि हमें आज़ादी मिली... फिर माइक पकड़ता... "गोया कि हमें मिहनत (मेहनत नहीं) करनी है..." फिर थोड़ा सिर खुजाता और टोपी ठीक करने का अभिनय करता ... "गोया गोया गोया कि हमें देश को, मुल्क को आगे ले जाना है। "गोया ...तरक्की करना है ...।"

तालियों पर तालियाँ पिट रही थीं। दूर के पड़ोसियों को बच्चे दौड़-दौड़कर खबर कर रहे थे – ऐ जल्दी आओ.... राजा की आई... जल्दी चलो... आँगन में वैज्जी का सप्पू नेहरूजी के भाषण की खूब मस्त नकल कर रहा है। और आइयाँ, बाइयाँ, ताइयाँ, काकू, आजोबा सब-के-सब काम छोड़-छोड़कर आ रहे थे और बार-बार मुझसे भाषण दिलवाया जा रहा था। तालियाँ पीटी जा रही थीं और हर भाषण से पहले हमारा मोटरसाइकिल का कारवाँ गली के चक्कर लगाकर आ रहा था।

जिस समय आँगन में यह चल रहा था, वहाँ के सबसे सम्पन्न व्यक्ति कुटुम्बले वकील अपने कमरे में बैठे किसी मुकदमे की तैयारी कर रहे थे। इतने में उनका लड़का अशोक ठुनकता हुआ उनके कमरे में पहुँचा और बोला, "काका मुझे नेहरूजी बनना है। मुझे अब्बी के अब्बी नेहरूजी बनना है।"

कुटुम्बले वकील ने उसे पहले तो घूरा, फिर डाँटा, "लप्पड़ खाना है क्या? होमवर्क तो होता नहीं अपना, नेहरूजी बनेंगे साले।"

अशोक बोला, "वैज्जी का सप्पू बन सकता है तो मैं क्यों नहीं बन सकता?"

काका जी बोले, "तो बन जा। मना किसने किया?"

अशोक बोला, "लेकिन मैं भाषण कैसे दूँगा?"

काका बोले, "क्यों? जैसे वो दे रहा है तू भी दे देना। वो कैसे दे रहा है?"

अशोक बोला, "वो तो गोया...गोया कर रहा है।"

काका बोले, "तो तू भी गोया गोया कर दे। नहीं तो मोया मोया कर दे। कुछ भी कर दे।"

अशोक ठुनकते हुए बोला, "नहीं, तुम मेरे को भाषण लिखकर दो। अब्बी के अब्बी।"

जब बहुत समझाने पर भी अशोक नहीं माना तो काका ने उसे एक कागज़ पर आठ-दस लाइन का भाषण लिखकर दे दिया।

कुछ देर बाद दृश्य यह था कि स्टूल के सहारे टंकी पर खड़ा अशोक – जो पता नहीं क्यों काला चश्मा भी लगा आया था – दोनों हाथ से कागज़ पकड़े नेहरूजी का भाषण पढ़ रहा था। भाषण में विकास, योजना और भविष्य जैसे बड़े-बड़े शब्द आ रहे थे, लेकिन इस अमीर नेहरूजी का भाषण सुनने के लिए आँगन में एक भी आदमी नहीं था।

अगले दिन बड़े मामा जी ने मेरे पिताजी को चिट्ठी लिखी, "आपका लड़का आज नेहरूजी बना था। काफी ठीक-ठाक रहा।"

पता नहीं पिताजी क्या समझे होंगे!

अगस्त माह की चित्र पहेली का हल

डा	कि	या			कै	ले	ण्ड	र
	ता		झू	म	र			
	ब	गु	ला		म	क	ब	रा
आ		ल्ल		म			टु	
स	ड़	क		ट			आ	ग
मा			म	का	न			र
न	ट		छु		म		खं	बा
	क	छु	आ		स्का		ज	
मे	ला		रा		र	ब	र	



पृष्ठ 2 से आगे...

हम लोग तीन-तीन की दो लाइनें बनाकर चल रहे थे। जैसे-जैसे हम पहाड़ों के अन्दर जाने लगे वैसे-वैसे हरे मैदानों की जगह जंगली झाड़ियाँ दिखाई देने लगीं। और तभी वह हुआ जिसकी आशंका भी न थी। एक अन्धे मोड़ पर मैंने जैसे ही दाएँ हाथ की ओर गाड़ी घुमाई वैसे ही सामने कंकड़-पत्थरों का एक सँकरा रास्ता दिखा। मैं फिसलकर गिरा और मोटरसाइकिल मेरे ऊपर आ गई। हेल्मेट दूर जा गिरा। यह तो अच्छा था कि टखने और कोहनी छिलने के अलावा मुझे कुछ खास चोट नहीं आई। थोड़ी ही देर में वर्गीज़ और माइक आ पहुँचे। हमने विक्टर को फोन किया जो आगे बड़ी गाड़ी में था। उसकी टीम ने आते ही गाड़ी की मरम्मत शुरू कर दी। हेडलाइट टूट गई थी और फुटरेस्ट टेढ़ा हो गया था। वर्गीज़ ने मेरे घावों पर आयोडीन लगाई। टिटनेस का इंजेक्शन तो मैं लगवाकर ही चला था।

मण्डी (हिमाचल प्रदेश) के रास्ते में हमें कई लोग मिले जो इशारों से बता रहे थे कि हमारी गाड़ियों की बत्तियाँ जल रही थीं। दरअसल अन्तर्राष्ट्रीय मापदण्डों के मुताबिक हमें दिन में भी अपनी गाड़ियों की बत्तियाँ जलाए रखनी थीं। मण्डी पहुँचकर हम मोहित के पेट्रोल पम्प पर रुके। मोहित एक जाने-माने बैण्ड "सिल्क रूट" का सदस्य है। मेरे सीने में दर्द हो रहा था। डर था कोई पसली न टूट गई हो। जलन और दर्द से बचने के लिए मैंने एक दर्द निवारक गोली ले ली। गाड़ियों में पेट्रोल और टायरों में हवा भरवाकर हम कुल्लू की ओर चल दिए। ठण्डी हवा चलने लगी थी। झोक व रोडोडेन्डॉन जैसे सदाबहार पेड़ों की कतारें दिखने लगी थीं। ब्यास नदी हमारे साथ-साथ बह रही थी। हमारे रुकने का इन्तज़ाम मनाली में था। मनाली पहुँचते-पहुँचते रात के 8 बज चुके थे। हमने खाना खाया और गपशप करने लगे। उसी समय माइक ने अपना गिटार निकाल लिया और देर रात तक गाना बजाना चलता रहा।

अगले दिन 23 जुलाई की सुबह जब मैं सोकर उठा तो काफी अच्छा महसूस कर रहा था। मैंने अपने घावों की मरहम पट्टी करवाई। फिर हम मनाली घूमने निकल पड़े। हरी-भरी वादियों के अलावा हमने यहाँ नागर महल और प्रसिद्ध रूसी चित्रकार रोरिख का घर देखा जो दूर एक ऊँची पहाड़ी पर था। पुराने मन्दिर और दिलकश ब्यास नदी देखी। सेब के बगीचों में पेड़ों पर इस कदर सेब लगे थे कि उन्हें सहारा देकर रखा गया था। दिन के 2 बजे हमारे कैमरामैन शेम्स की तबियत अचानक बिगड़ गई। वह कमज़ोरी महसूस कर रहा था और उसका जी मिचला रहा था। सिर दर्द कर रहा था। ये सब लक्षण एक्यूट माउंटेन सिकनेस के थे। आमतौर पर यह तकलीफ मैदानी इलाकों से पहाड़ों पर पहुँचने पर पेश आती है।

हमारा अगला पड़ाव लगभग 13 हज़ार फुट ऊँचा रोहतांग दर्रा था। दिन के करीब 11 बजे हम रोहतांग पहुँचे। वहाँ काफी भीड़ थी और पार्किंग में कई वाहन खड़े थे। वहाँ का नज़ारा दिल्ली से बहुत अलग नहीं था। 4 बजे के करीब हम टाडी पहुँचे। यहाँ हमने अपनी गाड़ियों में पेट्रोल भरवाया क्योंकि अब लेह तक कोई भी पेट्रोल पम्प नहीं पड़ने वाला



था। हमने रात का खाना सेना के लंगर में खाया। और सो गए। सुबह जल्दी जो उठना था। विक्टर की सलाह थी कि आगे के कठिन रास्तों के लिए हमें सुबह जल्दी उठकर कुछ अभ्यास कर लेना चाहिए। इनमें सबसे ज़रूरी वह अभ्यास था जिसमें हमें सँकरी और कंकड़ भरी ज़मीन पर बिना पैर टिकाए अपनी गाड़ियाँ निकालनी थीं। इसके अलावा हमने आकृतियाँ बनाकर गाड़ियाँ चलाने का अभ्यास भी किया। इस दौरान कैमरा टीम सक्रिय थी और हमारे कारनामों को लगातार कैद कर रही थी।

रास्ते में कई जगहों पर सड़क हल्की टूटी हुई थी। कुछ परेशानियों के साथ हम लगभग 15 हज़ार फुट ऊँचे बारालाचा ला नामक दर्रे के पास थे। यहाँ पर वनस्पति बहुत कम थी और दूर-दूर तक रेगिस्तान जैसा माहौल महसूस हो रहा था। पहाड़ों की ढालों पर भी वनस्पति नहीं थी। इसी समय माइक में एक्यूट माउंटेन सिकनेस के लक्षण दिखाई देने लगे। हम थोड़ी देर रुके और नाश्ता करके खूब पानी पिया। दरअसल ऊँची जगहों पर ज़्यादा से ज़्यादा पानी पीना बहुत फायदेमन्द होता है। इससे डिहाइड्रेशन नहीं होता। हमने अपने शरीर को अच्छी तरह से ढँका हुआ था जिससे पहाड़ी गर्मी और तेज़ हवा के चलते हमारे शरीर से कम से कम पानी वाष्पित हो। जब हम सारजू घाटी से गुज़र रहे थे तभी अचानक रेतीली ज़मीन आ जाने से मेरी गाड़ी फिसली और मैं नीचे जा गिरा। घुटने और कोहनी पर सुरक्षात्मक खोल होने के कारण मुझे चोट तो नहीं आई लेकिन गाड़ी की हेडलाइट टूट गई। आगे हरी-भरी घास के मैदान थे जिनसे फिसलकर कई जलधाराएँ गुज़र रही थीं। इन पर से निकलने के कारण हमारे जूते गीले हो गए और हमें काफी ठण्ड लगने लगी। मुझे हल्का सिरदर्द भी होने लगा था। आँखों के पिछले हिस्से में दर्द महसूस होने लगा था। चलते समय पैरों का तालमेल बैठाने में भी दिक्कत हो रही थी। मैंने एक कप चाय पी जिससे काफी राहत महसूस हुई। मोटरसाइकिल चलाने में दिक्कत हो रही थी इसलिए मैं आगे





चल रही बड़ी गाड़ी में बैठ गया। इस गाड़ी से मैंने पांग तक का सफर किया। पांग पहुँचने पर चन्दन और सरोश मुझे सैनिक अस्पताल ले गए जहाँ डॉक्टर ने मेरी जाँच की। पता चला मेरा रक्त-ऑक्सीजन संतृप्तता स्तर 68 प्रतिशत रह गया है जबकि एक स्वस्थ व्यक्ति में यह 91 प्रतिशत होता है। मेरे पास के बिस्तर पर सौरव लेटा था जो कि परेशान और सुस्त नज़र आ रहा था। डॉक्टर ने जाँच के बाद बताया कि उनकी हालत तो मुझसे भी खराब थी। उसका रक्त-ऑक्सीजन संतृप्तता स्तर 62 प्रतिशत तक गिर गया था। सौरव को ऑक्सीजन दी गई जबकि मुझे कुछ गोलियाँ देकर आराम करने को कहा गया। लगभग 2 घण्टे बाद मुझे आधे घण्टे तक ऑक्सीजन दी गई। ऑक्सीजन लेने के बाद मुझे काफी अच्छा लग रहा था। इसके बाद रात को मुझे अच्छी नींद आई।

अगले दिन सुबह डॉक्टर से जाँच करवाकर हम आगे निकल पड़े। मैंने और सौरव ने उपशी तक बड़े वाहन में बैठकर जाना तय किया जिससे कुछ और आराम मिल सके। सुबह 8 बजे के करीब हम लोग टंगलांग ला पहुँच गए जो समुद्र तल से 17582 फुट की ऊँचाई पर है। यहाँ का मौसम सुहाना था और सूरज चमक रहा था। मैं गाड़ी में लेटा रहा जबकि बाकी लोगों ने मौसम का लुत्फ उठाया। पानी के स्रोतों के आसपास उगी छोटी-मोटी घास को छोड़कर कहीं कोई वनस्पति दिखाई नहीं पड़ती थी। उपशी पहुँचते-पहुँचते मैं एकदम स्वस्थ महसूस करने लगा था। उपशी से लेह तक मैंने खुद मोटरसाइकिल चलाई और रात के लगभग 9 बजे हम लोग लेह पहुँच गए।

सुबह लगभग 11 बजे मैं और माइक लेह के पोलो मैदान पहुँचे जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय संगीत महोत्सव होने वाला था। माइक बढ़िया गिटार बजाता है और गाता है। मुझे भी गाने बजाने का शौक है। इसलिए हमने अपना नाम भी महोत्सव में दर्ज करा दिया। हमारी योजना अपनी पूरी टीम के साथ

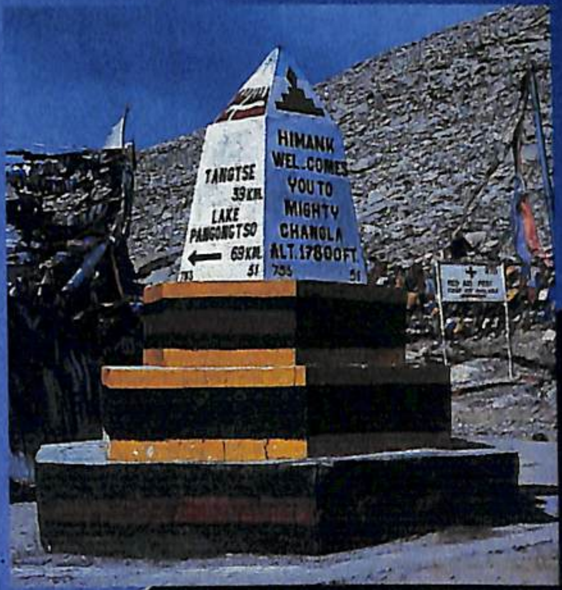
मोटरसाइकिल सहित मंच पर पहुँचकर अपना कार्यक्रम देने की थी इसलिए हमने सबसे पहले मंच की मज़बूती को परखा जिससे ऐन कार्यक्रम के वक्त कुछ गड़बड़ न हो। इस दौरान कैमरा टीम लेह के विभिन्न स्थानों की शूटिंग में व्यस्त थी। रात के खाने के बाद हम लोग देर रात तक चाँदनी का लुत्फ उठाते रहे। 29 जुलाई की सुबह 8 बजे माइक और मैं अपनी मोटरसाइकिलों पर कारगिल रोड की तरफ निकले। माइक मेरे आगे चल रहा था और मैं उसकी दाईं ओर थोड़ा पीछे था। आगे बाईं ओर मोड़ था। माइक की देखादेखी मैं भी मुड़ा। अचानक मुझे सामने से एक ट्रक आता दिख गया। मैंने पूरी ताकत से ब्रेक लगाते हुए गाड़ी को तेज़ी से एक तरफ मोड़ा। ऐसे में मैं गाड़ी को सम्भाल नहीं पाया और गाड़ी कंकड़ों पर से फिसलती हुई ट्रक के सामने आ गिरी। अच्छा हुआ कि ट्रक वाला मेरी परेशानी समझ गया था और उसने मुझसे लगभग 10 फुट दूर ट्रक को रोक लिया था। मुझे तो नहीं लेकिन गाड़ी को चोट लगी थी। फिर से हेडलाइट टूट गई। जब मैंने विक्टर को सारी घटना सुनाई तो उसने कहा कि कहीं मैं हेडलाइट तोड़ने का रिकॉर्ड तो नहीं बनाने वाला हूँ। रात के साढ़े नौ बजे हम लेह से पांग पहुँच गए। एक लद्दाखी महिला से हमने पैराशूट का तम्बू किराए पर लिया। अब तक विक्टर ने अपनी टीम के साथ मोटरसाइकिलों की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कर ली थी।

हम विश्व कीर्तिमान बनाने निकल पड़े...

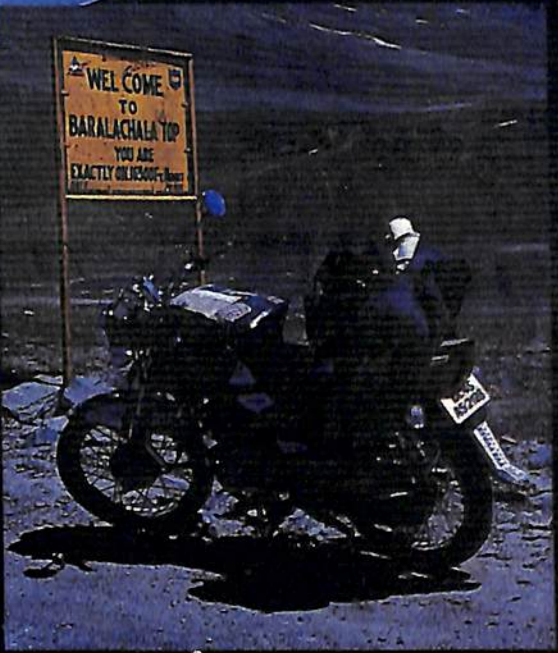
31 जुलाई की रात 12 बजकर 15 मिनट पर तम्बू की मालकिन ने हमें गरमा-गरम कॉफी के साथ उठा दिया। कॉफी पीकर हम अपनी-अपनी मोटरसाइकिल पर सवार हुए। हमारे साथ चल रहे जे.सी.ओ. ने समय देखा। उसने हमारी गाड़ियों की दूरी नोट की। कैमरा टीम ने इन शुरुआती लम्हों को अपने कैमरे में कैद किया। और हम अपना विश्व कीर्तिमान बनाने निकल पड़े। रात के करीब 2 बजे हल्की बर्फबारी के बीच हम टंगलांग ला पहुँच गए। वहाँ से हम उपशी पहुँचे जहाँ हमने मिलेट्री पुलिस के पास अपनी एन्ट्री की। यहाँ पर हमने पकौड़े और चाय ली। उपशी से हम 3 बजे निकले और सुबह के साढ़े चार बजे हम सक्ती के पास उस जगह पहुँच गए थे जहाँ से वारीला और चांग ला के लिए दो रास्ते जाते थे। इतने में सड़क पर फैले पानी पर चन्दन की मोटरसाइकिल फिसली। पर उसे चोट नहीं आई। सुबह के साढ़े पाँच बजे हम चांग ला पहुँच गए। हालाँकि यहाँ तक का रास्ता ऊबड़-खाबड़ था लेकिन बर्फ से बह आए इस दर्रे का नज़ारा देखते ही बनता था। चांग ला सभी दर्रों में सबसे खूबसूरत जगह थी। यहाँ पर एक गोरखा जे.सी.ओ. तैनात था जिसने हमारे चाय-पानी की व्यवस्था की। वहाँ से हम टांगटसे पहुँचे जहाँ तैनात डोगरा रेजीमेंट के जे.सी.ओ. ने हमारे परमिटों की जाँच की।

इस समय हम अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के बिल्कुल पास खड़े थे। यहाँ से हम लुकुंग पहुँचे जहाँ हमने याकों को चरते देखा। वे हमें देखकर यहाँ-वहाँ भाग रहे थे। आगे बकरियों का झुण्ड भी दिखाई दिया। विशाल झील पैंगांग सो भी वहीं थी। यहाँ से हम बाईं ओर मुड़कर मारसीमिक ला की ओर जाने वाली पथरीली रोड पर चढ़ने लगे। सुबह के करीब 11 बजे हम भारत-तिब्बत सीमा पुलिस की चौकी पर पहुँचे। हमारे यहाँ आने की सूचना पहले से ही थी। यहाँ पर हमारे कागज़ातों की जाँच करने के बाद आगे जाने की इजाज़त दी गई। हमने बर्फ जैसे ठण्डे पानी की एक जलधारा को पार किया और रेतीली ज़मीन से होते हुए ऊपर की ओर चढ़ने लगे। 150 सी.सी. की मोटरसाइकिलें होने के बावजूद हमें ऊपर चढ़ने में मुश्किलें पेश आ रही थीं। पहाड़ी के ऊपर से आ रहे सेना के ट्रक से हमें पता चला कि मारसीमिक ला अब थोड़ी ही दूर था। लेकिन इस दूरी को तय करना हमारे लिए हर पल मुश्किल होता जा रहा था। हमें अपनी गाड़ियाँ पाँव से धकियाते हुए ऊपर चढ़ाना पड़ रही थीं। इसी दौरान मैं रेतीली ज़मीन पर फिसलकर गिर पड़ा और फिर से एक बार गाड़ी की हेडलाइट टूट गई। अब तक मेरा गिरना और हेडलाइटों का टूटना टीम में एक मज़ाक का विषय बन चुका था। एक बार फिर से गिरकर मैंने अपने व्यक्तिगत कीर्तिमान में और इज़ाफा किया। लगभग 19 हज़ार फीट की ऊँचाई पर गाड़ी को फिर से ज़मीन से उठाना और आगे की चढ़ाई चढ़ना वाकई एक मुश्किल भरा काम था। आखिरकार हम दुनिया के सबसे ऊँचे दर्रे तक पहुँच गए जिसे मारजीमिक ला के नाम से जाना जाता है। हम मारसीमिक ला को फतह कर चुके थे। हमारी खुशी देखते ही बनती थी।

कुछ समय वहाँ बिताने के बाद शाम के 4 बजे हम वापस पहाड़ से नीचे की ओर लौट पड़े। नीचे आने में हमें कोई खास दिक्कत नहीं हुई। इस दौरान हमने इतनी



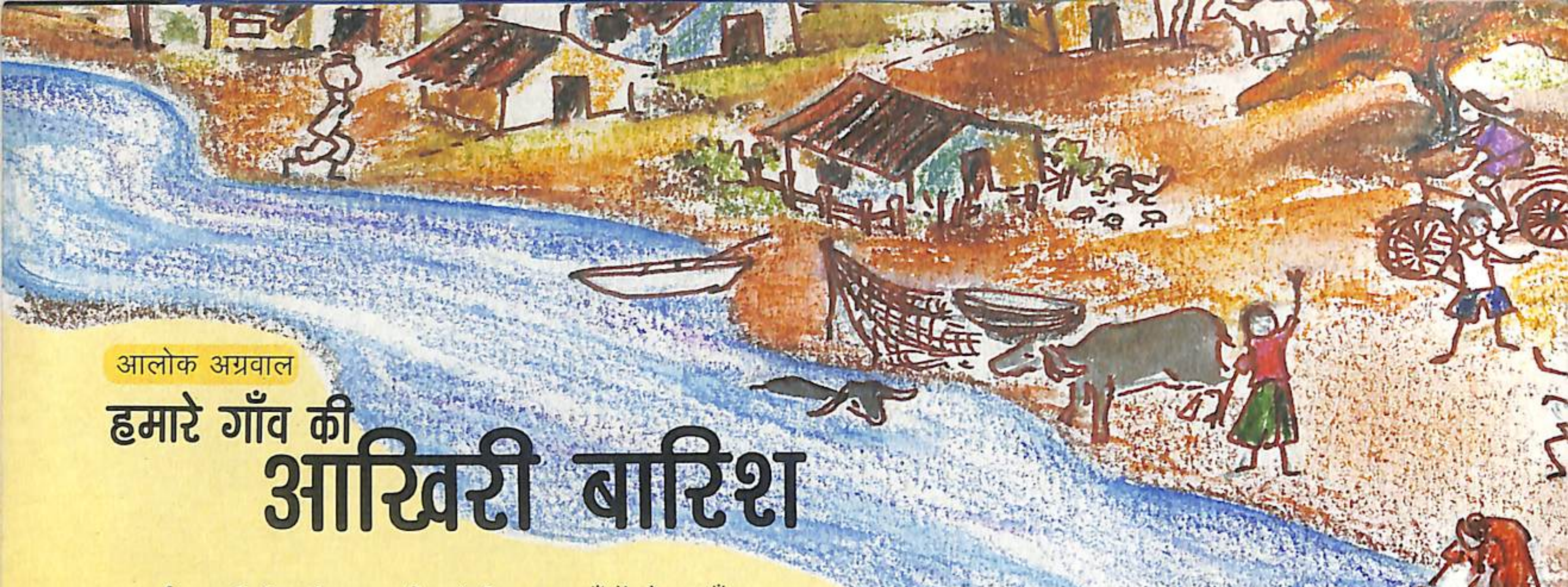
ऊँचाई पर मौजूद ठण्डे रेगिस्तान में खरगोश कबूतर, जंगली गधे और बिल्लियाँ भी देखीं। हमने पेंगांग सो में जलीय पक्षियों को तैरते देखा। करीब साढ़े चार बजे हम वापस कुकुंग पहुँचे और वहाँ पर चाय-नाश्ता किया। अँधेरा होने तक हम चांगला पहुँच चुके थे। हमारे पास अभी भी खारदुंग ला जाने का समय था। अब तक मैं शरीर और दिमाग दोनों से बहुत थक चुका था। ध्यान टिकाने के लिए मैं गाड़ी चलाते हुए गाने लगा। मुझे उड़ते बादल घूमते हुए लग रहे थे। अधिक ऊँचाई और थकान की वजह से मेरी एकाग्रता खत्म हो रही थी। मैंने अपने आपको साधने के लिए अपनी सारी ताकत झोंक दी थी। इन हालातों में हम दक्षिण पुल्लू पहुँचे जहाँ से खारदुंग ला केवल 15 किलोमीटर की दूरी पर था। जब हम पहाड़ पर चढ़ रहे थे उस वक्त वहाँ से लेह की बत्तियाँ जलती नज़र आ रही थीं। आखिरकार चाँदनी रात में हम खारदुंगला पहुँच गए और इस तरह हमने दुनिया की सबसे ऊँचे 4 दर्रों को 24 घण्टों के भीतर फतह कर लिया। हम विश्व कीर्तिमान बना चुके थे। हमने फोटो खींच इन लम्हों को कैद करने की कोशिश की। इसके बाद हमारा कारवाँ लेह की ओर चल पड़ा। यहाँ सेना के ब्रिगेडियर ने झण्डा दिखाकर हमारे अभियान के पूरा होने का संकेत दिया। सेना ने हमारे सम्मान में एक छोटे-से भोज का आयोजन किया। हम लोग बेहद थके हुए थे और खाने व कॉफी के बाद हम घोड़े बेचकर सो गए। अगले दिन हम एकदम तरोताज़ा थे। शाम को पोलो मैदान में हमारा कार्यक्रम था। तालियों के बीच हम स्टेज पर पहुँचे और संगीत का कार्यक्रम पेश किया। कैम्प वापस लौटकर हमने डट कर खाना खाया और दिल्ली लौटने की तैयारी में मशगूल हो गए।





फोटो: चन्दन लाहिरी
अनुवाद एवं प्रस्तुति: मोहित शर्मा

अगर तुम्हें मोटरसाइकिलिंग का शौक है और इस तरह के अभियान में शामिल होना चाहते हो, तो www.outthere-adventurers.com पर सम्पर्क कर सकते हो।



आलोक अग्रवाल

हमारे गाँव की आखिरी बारिश

नर्मदा नदी किनारे बसा गाँव खेड़ी। आम गाँवों जैसा गाँव – खेती है, बाग है, कच्चे-पक्के घर हैं और मिलजुलकर रहते सब लोग हैं। एक स्कूल भी है। गाँव के सभी बच्चे यहीं पढ़ते हैं।

बारिशों का मौसम शुरू होने को है। आज सुबह से ही बादल छाए हुए हैं। कभी-कभी बिजली चमकती है और फिर बादल ज़ोर से गरजते हैं।

बारिश आते ही गंगाबिशन का मन नाचने लगता है। बड़ा मज़ा आता है उसे। बारिश में छपक-छपक कूदना, बहते पानी में कागज़ की नाव छोड़ना और फिर उसके पीछे दौड़ना। किनारे खड़े होकर तेज़ बहती नदी को घण्टों देखते रहना।

बारिश आते ही अम्मा और बाबा भी बहुत खुश हो जाते क्योंकि अब वे फसल बो सकेंगे। पर गंगा ने देखा कि इस बार बारिश आती देख उसके बाबा, काका सभी चिन्ता में पड़ गए। आज स्कूल की छुट्टी है। गंगाबिशन तीसरी कक्षा में पढ़ता है। इस बार गर्मी की छुट्टी के बाद स्कूल खुला तो मास्टरजी ने बताया कि कुछ दिनों बाद स्कूल बन्द होने वाला है। स्कूल गाँव से हटाया जा रहा है।

सुबह जब माँ खाना बना रही थी, तब गंगा ने अपने बाबा से पूछ ही लिया, "बाबा, हमारा स्कूल क्यों बन्द हो रहा है?"

"हमारा गाँव डूब रहा है।" बाबा ने जबाब दिया।

"डूब रहा है! मगर क्यों?" गंगा हैरान था।

"क्योंकि अपनी नर्मदा माई पर एक मोटा (बड़ा) बाँध बना दिया है। उसमें पानी भरते ही हमारा गाँव डूब जाएगा।" बाबा ने बीड़ी सुलगाते हुए कहा।

"और अपनी ज़मीन?"

"वो भी डूब जाएगी।" बाबा बोले।

तभी गंगाबिशन को याद आया कि कुछ दिन पहले जब वह स्कूल में था तब गाँव में एक पीली बत्ती वाली जीपगाड़ी आई थी। उसमें एक साहब और कुछ पुलिस वाले थे। साहब ने पटेल और गाँववालों को बुलाकर कुछ कागज़ दिए थे। फिर कुछ कहा था।

"कौन बना रहा है बाँध को?" गंगा कुछ समझ नहीं पा रहा था।

"सरकार।" बाबा ने जबाब दिया।

"तो सरकार हमें ज़मीन देगी, गाँव देगी?"

"नहीं।"

"तो फिर हम कहाँ जाएँगे?" गंगा ने घबराते हुए पूछा।

"पता नहीं। सरकार ने बहुत थोड़ा-सा पैसा दिया है। पर उससे न तो ज़मीन खरीद सकते हैं, ना ही मकान बना सकते हैं। भगवान जाने क्या होगा?" बाबा ने लम्बी साँस भरते हए कहा।

"बबलू, श्यामा, गगन, रामकिशन, फजीत, रामप्यारी, पुष्पा सभी चले जाएँगे?" गंगा को अपने दोस्तों की याद आने लगी।

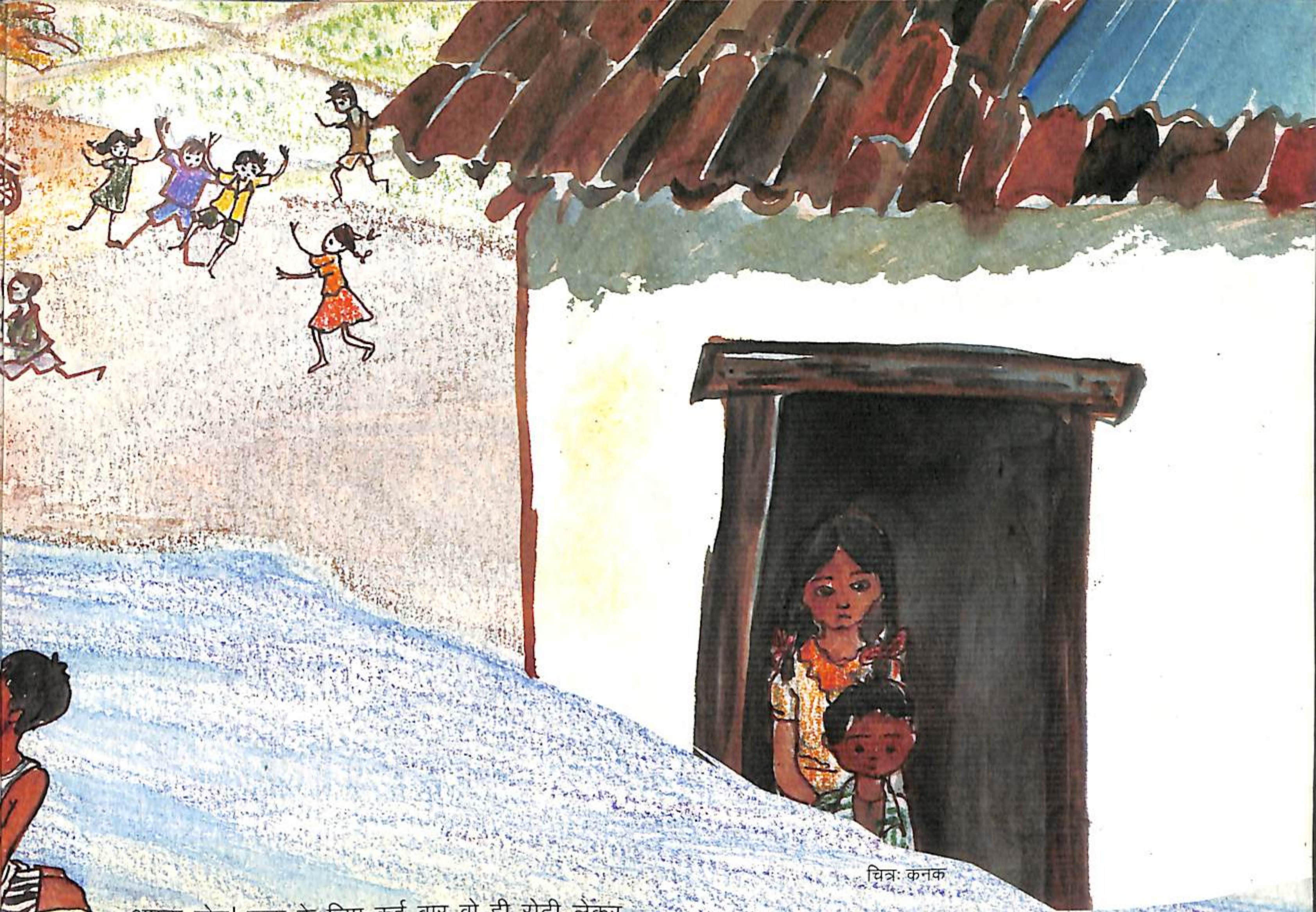
"हाँ। सभी।"

"कहाँ?"

"पता नहीं।"

गंगा का दिल बैठने लगा। उसको सब कुछ याद आने लगा। पेड़ पर चढ़कर अमिया तोड़ना, दोस्तों के साथ ढोर चराते हुए मस्ती करना, हाट और भैरो बाबा के मेले में बैलगाड़ी से जाना और खूब मज़े करना। जलेबी खाना, झूला झूलना। यह सब कुछ न रहेगा।

गंगा को स्कूल की पढ़ाई और बदमाशियाँ भी याद आने लगीं। अचानक सब कुछ बदला-सा लगने लगा। रामू जिससे उसका रोज़ झगड़ा होता था, अब उसे उससे कोई शिकायत न थी। कल तक खूँखार लगने वाले मास्टरजी भी अब अच्छे लगने लगे थे।



चित्रः कनक

अपना खेत! बाबा के लिए कई बार वो ही रोटी लेकर जाता था और देखता रहता बाबा को हल चलाते, खेती करते। और देखता भोलू और मोती को भी, जो घर के बैल नहीं गंगा के प्यारे दोस्त हैं, मस्ती के साथ पैर जमाकर खेत में चलते हुए। गेहूँ कटने के बाद उसके भूसे पर खूब कूदा-फाँदी करते थे। अमरूद, बेर के खूब सारे पेड़ हैं खेत पर। अब न खेत रहेगा, न पेड़ और ना ही भोलू और मोती ।

गाँव के बदरी काका, गबरू दादा, रईस चाचा, सभी कितना प्यार करते हैं उसे। कोई चवन्नी देता है, कोई अठन्नी। समोती माई की मीठी कहानियाँ और मीठी गोलियाँ याद आने लगीं। कौन सुनाएगा अब कहानियाँ? और रामप्यारी? गंगा और रामप्यारी हमेशा साथ स्कूल जाते-आते हैं। कक्षा में भी साथ-साथ बैठते हैं। एक-दूसरे की किताबों में कितने ही चित्र बनाए हैं दोनों ने। खाना भी दोनों बाँटकर खाते हैं। गंगा को उसकी बातें बड़ी अच्छी लगतीं, मन करता कि उससे बात करता ही रहे। वो भी चली जाएगी?

गंगाबिशन का मन ज़ोर-ज़ोर से रोने को किया। उसने बाबा से धीरे-से पूछा, "हम कब जाएँगे?"

"साहब कहते हैं कि बारिश होने पर बाँध में पानी भरे, उसके पहले ही जाना होगा।" बाबा ने असहाय होकर कहा ।

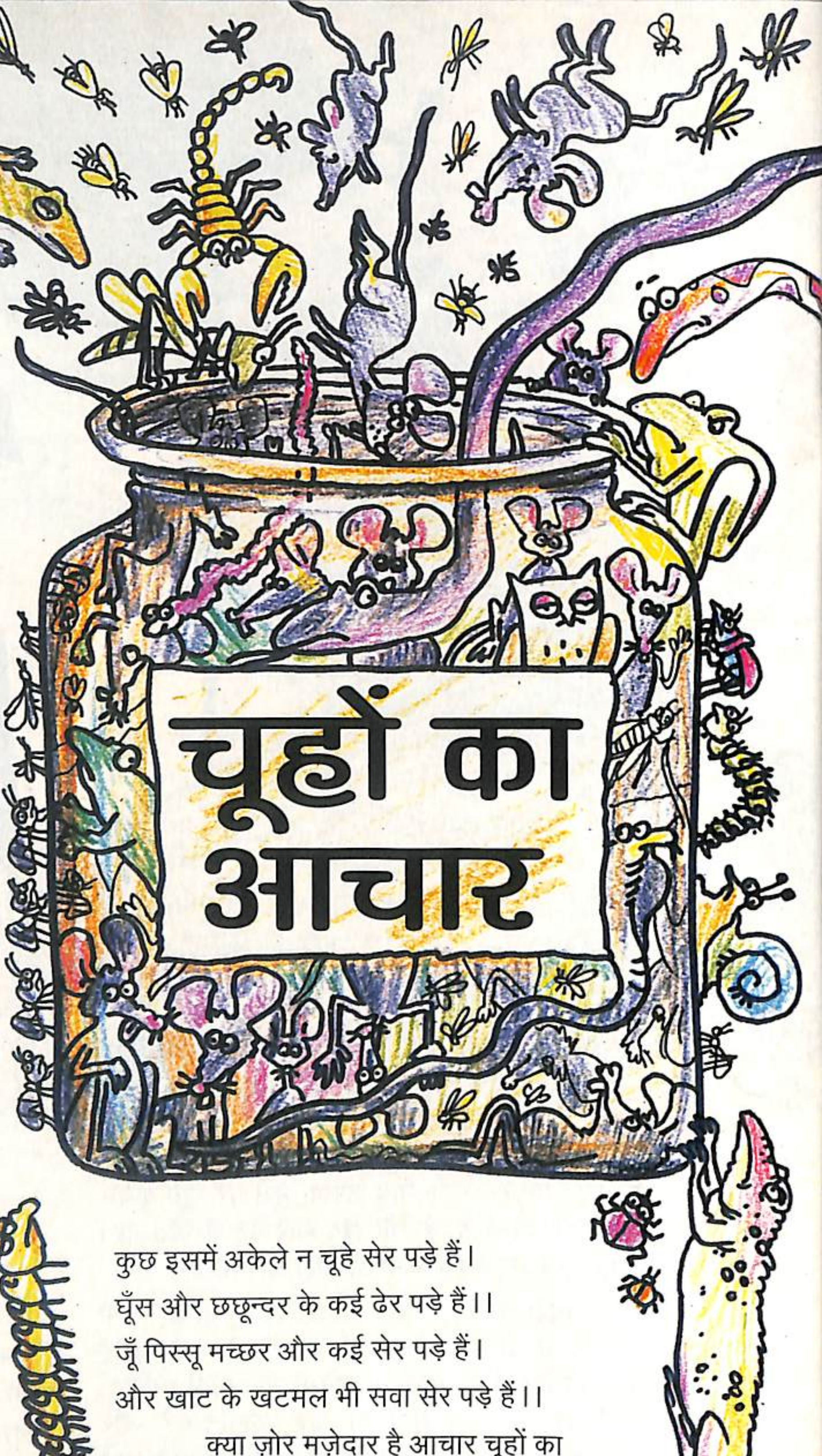
"पर कहीं जाने को नहीं है तो कहाँ जाएँगे?" गंगा ने बाबा का हाथ पकड़कर पूछा।

"नहीं जाएँगे तो पुलिस भगा देगी।" बाबा को पीली बत्ती वाली जीपगाड़ी के साहब की बात याद आ गई।

गंगा ने देखा चूल्हे के पास बैठी माँ पल्लू से आँखें पोंछ रही है। जिन आँसुओं को गंगा रोके बैठा था, माँ न रोक सकी।

बाहर तेज़ बारिश गिरने लगी। पर आज गंगा का मन कूदकर बाहर गली में जाने को न हुआ। माँ ने उसे रोटी खाने के लिए आवाज़ दी। पर गंगा धीरे-धीरे चलकर दरवाज़े के पास खड़ा हो गया। वो बाहर देखने लगा। इस पहली बारिश में खेलने बबलू, गगन, फजीत, श्यामा कोई भी गली में नहीं था। सब अपने-अपने दरवाज़ों पर खड़े, सहमे हुए गिरते पानी को देख रहे थे। शायद उन्होंने भी अपने बाबा से पूछ लिया होगा कि उनका स्कूल क्यों बन्द हो रहा है। चकमक





चूहों का आचार

नज़ीर अकबराबादी

फिर गर्म हुआ आन के बाज़ार चूहों का।
हमने भी किया खोमचा तय्यार चूहों का।
सर पाँव कुचल कूट के दो चार चूहों का।
जल्दी से कचूमर-सा किया मार चूहों का।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

आगे थे कई अब तो हमीं एक हैं चूहे मार।
मुद्दत से हमारा है इस आचार का व्यौपार।।
गलियों में हमें ढूँढते फिरते हैं खरीदार।
बरसे हैं पड़ी कौड़ी, रूपे पैसों की बौछार।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

सूखे जिसे तरकारी से तलने के हों दरकार।
तो सूखे भी खूँटी पे लटकते हैं कई हार।।
कुछ तेल के कुछ पानी के कुछ चटनी है तय्यार।
किस तरह की लज़्ज़त है तू चख देख मेरे यार।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

दीमक की मिर्च लाल सड़ी लीकों की राई।
दुम टाँग नली खोपरी नस-नस है सड़ाई।।
और जिस पे सड़ी मोरी की कीचड़ है मिलाई।
जब ऐसी बनी ज़ोर मज़ेदार खटाई।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

कुछ केंचुए कुछ बिच्छू हैं, कुछ नाग हैं काले।
भूने हुए च्यूंटे भी कई सेर हैं डाले।।
कुछ टुकड़ियाँ कुछ मक्खियाँ कुछ मकड़ी के जाले।
और उनके सिवा कितने मसाले हैं जो डाले।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

कुछ इसमें अकेले न चूहे सेर पड़े हैं।
घूँस और छछून्दर के कई ढेर पड़े हैं।।
जूँ पिस्सू मच्छर और कई सेर पड़े हैं।
और खाट के खटमल भी सवा सेर पड़े हैं।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

अव्वल तो चूहे छाँटे हुए कद के बड़े हैं।
और सेर सवा सेर के मेंढक भी पड़े हैं।।
चख देख मेरे यार यह अब कैसे कड़े हैं।
चालीस बरस गुज़रे हैं जब ऐसे सड़े हैं।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का



चिमगादड़, अबाबील की टाँटे भी पड़ी हैं।
उल्लू के पर और गिद्ध की बीटें भी पड़ी हैं।।
गोबर की डली बीट की खातें भी पड़ी हैं।
सर कौवों के और चील की आँतें भी पड़ी हैं।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

चूहों का जुदा चूहों की मूँछों का जुदा है।
दुम का वह जुदा कान का आँखों का जुदा है।।
लोटे में सड़ी खाल का बालों का जुदा है।
प्याली में निरी सूत-सी आँतों का जुदा है।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

खावे जो इस आचार की एक मूँछ की झुण्डी।
खुल जावे सब उसके वह दिलो जान की घुण्डी।।
आती है चली मुल्कों से हुण्डी पे जो हुण्डी।
जो सर है, चूहे का सो मज़े में है वह मुण्डी।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

गर पाँच रूपे होवें तो एक छिपकली ले लो।
और एक अशरफी का छछून्दर सड़ी ले लो।।
मत घूँस के तईं देख के तरसाओ जी ले लो।
ले लो अजी ले लो, अजी ले लो अजी ले लो।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

जब दाँत तले खोपरी भरती है चराके।
खुल जाते हैं लज़्ज़त के दिलों बीच भभाके।।
चखते ही जुबां भरती है इस ढब के तड़ाके।
शबरात में जिस तरह से छुटते हैं पटाके।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का



लाता है कोई चिकने घड़े और कोई कोरे।
प्याला कोई थाली कोई पीतल के कटोरे।।
क्या लेंगे अब उसको कि जो मफ्लिस हैं छछोरे
खावेंगे वही जोकि हैं दौलत के चटोरे।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

पाचन के ऊपर अब तो यह चूरन का चचा है।
जो खावे तो फिर पेट का पत्थर भी पचा है।।
तुरशी में खटाई में यह अब ऐसा रचा है।
जो आम का बाबा है तो लीमू का चचा है।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का



आगे जो बनाया तो बिका तीस रुपे सेर।
और गहकी गए ले इसे पचीस रुपे सेर।।
जाड़ों में यह बिकता रहा बत्तीस रुपे सेर।
और होलियों में बिकता है चालीस रुपे सेर।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

रोज़ी तो हमारी यह उतारी है खुदा ने।
दिन रात पड़े हमको यह आचार बनाने।।
और पेट के भी वास्ते दो पैसे कमाने।
लज़्ज़त को "नज़ीर" इसकी जो खावे वही जाने।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

दुकानवाले ने मियाँ नज़ीर के लिए आचार भेजा। उसमें से निकली मरी हुई चुहिया। बस यही बात इस नज़्म को लिखने का कारण बनी।

माथा पच्ची

मुकेश मालवीय

घोटल-मोटल के खेल

आजकल घोटल और मोटल को गणित में बड़ा मज़ा आ रहा है। घोटल-मोटल ने एक दूसरे के लिए कुछ जोड़-घटाने के सवाल बनाए। उन्होंने सभी संख्याओं को एक अक्षर से बदल दिया है। तुमको पता करना है कि उन अक्षरों की जगह कौन-सी संख्या रखने पर सवाल का जवाब सही हो जाएगा। एक सवाल का हल हम दे रहे हैं। देखना, क्या इसी सवाल के और हल भी हो सकते हैं?

घो ट ल	620	घो ट ल
+ मो ट ल	420	+ मु के श
तो ल मो ल	1040	मो ट ल

मु के श	ट ल धो
- घो ट ल	- ल मो ट
मो ट ल	घो प मो

यहाँ हर सवाल के लिए अलग-अलग सँख्याएँ ली गई हैं। तुम भी ऐसे सवाल बना सकते हो।



"मान लो सारे अच्छे लोग गोरे हो जाएँ और सारे बुरे काले तो बताओ तुम किस रंग के होना चाहोगे?" टीचर ने पूछा।

एक छोटी-सी बच्ची ने जवाब दिया, "मैं धारीदार होना चाहूँगी।"

रेक्स डी रोज़ारियो

उलझन

चोर और चोरी का माल

एक दिन राशिद बाज़ार गया। रास्ता सुनसान था। आगे एक बूढ़ी औरत धीरे-धीरे चल रही थी। अचानक एक काली मोटरसाइकिल पर सवार काला हैल्मेट लगाए दो लड़के तेज़ी से बुढ़िया के पास से गुज़रे। पीछे बैठा लड़का बुढ़िया का पर्स और चेन खींचता है। बुढ़िया गिर पड़ती है। और मोटरसाइकिल सवार तेज़ी से फरार हो जाते हैं।

राशिद कुछ देर के लिए घबरा जाता है। फिर वह भागकर बुढ़िया को उठाता है। उसे खास चोट नहीं लगी है। लेकिन अचानक हुए हमले से वो होश खो बैठी है और कुछ बुदबुदा रही है। उसे शान्त कराकर वह सोच में डूबा है। क्या करूँ?

उसी वक्त वहाँ से एक खाली ऑटोरिक्शा गुज़रता है। राशिद उसे रोककर शिकायत दर्ज कराने नज़दीक की पुलिस चौकी जाता है। पुलिस घटना का पूरा विवरण माँगती है – क्या हुआ?, छीननेवालों के कपड़े, मोटरसाइकिल का नम्बर, आदि।

राशिद के मन में खलबली मची है। वह मोटरसाइकिल का नम्बर और उस पर सवार दोनों लड़कों को जानता है। वे उसी के साथ ही पढ़ने वाले किशोर और आमिर हैं। उसके जिगरी दोस्त! दोनों ड्रग्स के गुलाम।

पर कुछ सोचकर वह पुलिस को घटना की कुछ-कुछ जानकारी देता है।

क्या राशिद ने सही किया? क्या उसकी चुप्पी ठीक है? वहाँ तुम होते तो क्या करते?

अगले दिन, स्कूल में किशोर और आमिर उससे कहते हैं, "अच्छा हुआ तुमने पुलिस को नहीं बताया, वरना....। चलो, छोड़ो ये सब बातें। मोबाइल चाहिए क्या? सस्ते में? सब फीचर्स हैं – कैमरा, एफ.एम., गेम्स, इंटरनेट। बस, एक हज़ार में। लेना है क्या?"

राशिद सोचता है कि सौदा अच्छा है पर इसमें कोई शक नहीं कि यह चोरी का माल है। उस बूढ़ी अम्मा के पर्स में भी तो ऐसा ही मोबाइल था।

राशिद क्या करे?



चित्रः जितेन्द्र ठाकुर

चित्र पहेली



चित्र: कनक

विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (XI)



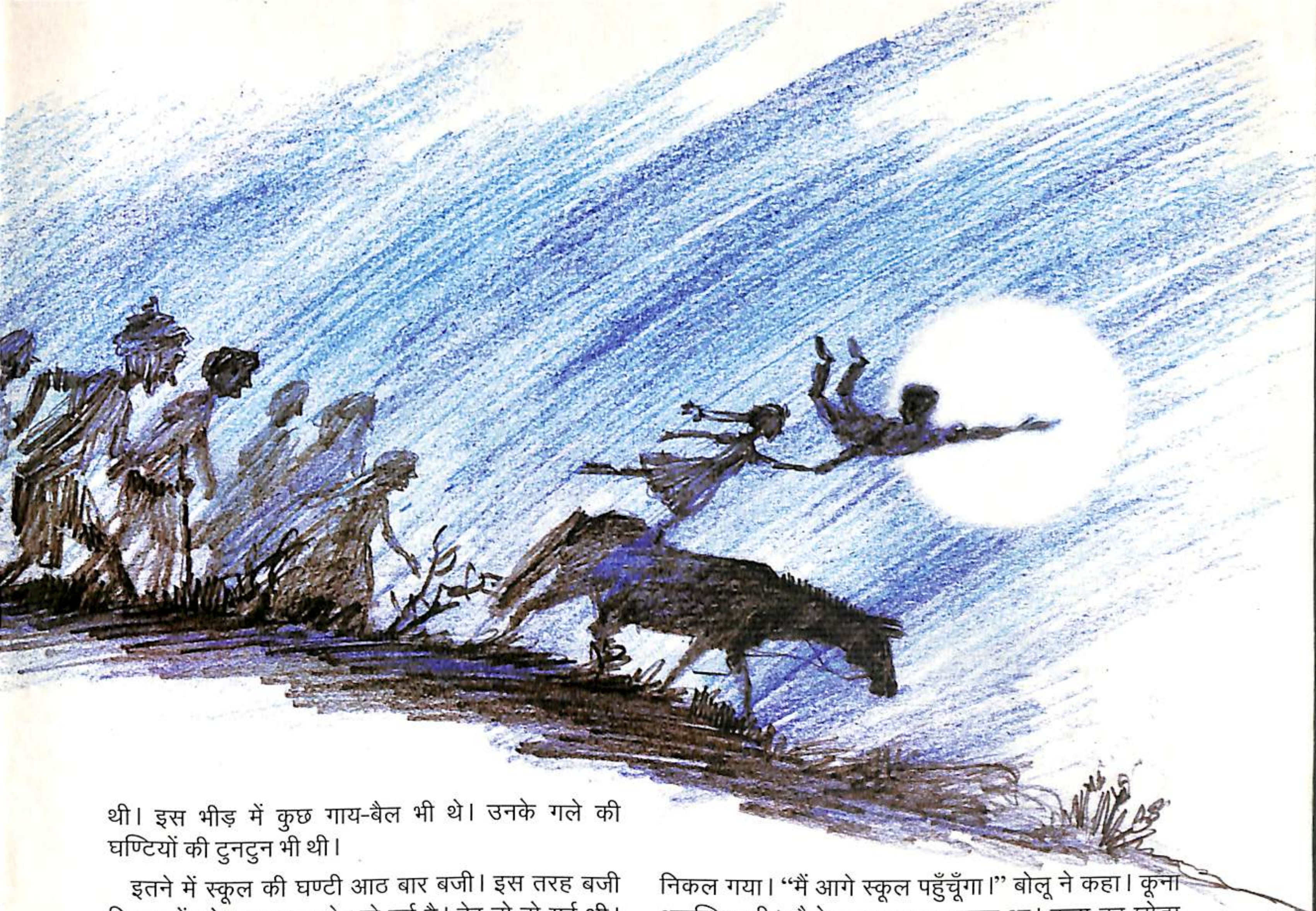
सोमवार को चाँदनी रात थी। बच्चे इसके पहले रात को स्कूल नहीं आए थे। रात को स्कूल कैसा दिखता है यह उनको मालूम नहीं था। बच्चे आने को थे। उनकी तैयारी चल रही होगी। वे तैयार हो चुके होंगे। पर मामा, नाना लोग तैयार हो रहे होंगे। किसी की गुड़िया सज रही होगी। नए कपड़ों की कतरनों से उन्हें सजाया जा रहा होगा। माँ को कंघी करता देख बोलू को अम्मा की याद हो आई। वह अम्मा के घर भागने ही वाला था। वह कुछ कहता इसके पहले माँ ने उसे पकड़ लिया, "ला, कंघी कर दूँ।" माँ उसकी कंघी करने लगी। घुँघराले बाल होने के कारण माँ धीरे-धीरे कंघी कर रही थी। माँ की पकड़ जैसी ही ढीली हुई "मैं अम्मा के पास जा रहा हूँ।" कहता हुआ वह भाग खड़ा हुआ। "मैं अम्मा से कंघी करवा लूँगा।" बार-बार कहता हुआ वह भागा जा रहा था।

बस्ती में चन्द्रमा निकल आया था। लगता है कि यह स्कूल में निकला चन्द्रमा था। जो उत्सुकता वश बस्ती में आ गया था कि क्या कारण है कि बच्चे अभी तक स्कूल नहीं पहुँचे। या हो सकता है कि पहले बस्ती में आया हो कि बस्ती के साथ स्कूल जाएँगे। चन्द्रमा के आ जाने से बस्ती में त्यौहार का उजाला हो गया हो गया था कि चन्द्रमा निकल गया देर हो रही है। हरी घास की छप्पर की घास के घने के बीच से चन्द्रमा निकला था। इसलिए उसका प्रकाश घास की ओर से भीगा था। हवा में ओस की ठण्डक थी। पारदर्शी गीले प्रकाश में चलती हवा इसका कारण हो। घरों में बच्चों का अधिक कोलाहल था। अभी अगर कोई भटक कर बाहर से आ जाए तो उसे लगेगा कि वह बच्चों की बस्ती में आ गया है। वह एक घर का दरवाज़ा खटखटाएगा तो गुड़िया जैसी सजी लड़की दरवाज़ा खोलेगी। दूसरे घर का दरवाज़ा खटखटाएगा तो गुड्डे जैसा सजा लड़का दरवाज़ा खोलेगा। "क्या आप भटक कर आए हैं?" वह पूछेगा। तो उसे लगेगा कि वह बड़ा है इसलिए भटका हुआ लग रहा है। बच्चा होता तो भटका हुआ नहीं लगता।

अब आभास होने लगा था कि घरों से बच्चे निकलने ही वाले हैं। घरों में झाँकने चन्द्रमा उचककर थोड़ा ऊपर हो गया था। हवा शान्त हो गई थी। शान्त हो गई थी यानी हवा ठहर गई थी कि ठहरे हुए वह घरों से बच्चों का निकलना देखे। हवा के ठहरने के बाद भी पेड़ हिल रहे थे। पत्तियों में हरहराहट थी। पेड़ों का हिलना बच्चों के पास जाने की उनकी इच्छा थी। अगर कहावत में जाएँ या न भी जाएँ, पेड़ इतने उत्सुक थे कि अपने आप में डाल-डाल और पात-पात हो रहे थे।

पहला बच्चा जब स्कूल जाने के लिए अपनी माँ के साथ घर से बाहर निकला तो ऐसा दिखा जैसा खिलने पर फूल दिखता है। उसने अपनी माँ से कहा, "सब चले गए।" उसकी माँ को भी लगा कि हो सकता है। ठीक उसी वक्त सब घरों से बच्चे एक साथ बाहर आए और एक साथ कहा, "हम आ गए।" फिर गलियों, रास्तों में फूलों की क्यारियाँ-सी हो गईं। एक मेला लगने के लिए रात में स्कूल जा रहा था। बच्चों के साथ परिवार के लोग थे। सयाने लोग भी थे। बस्ती के बूढ़े और बूढ़ी भी थे। इनके साथ-साथ चन्द्रमा प्रकाश दिखाता हुआ जा रहा था। बोलू को लगता कि चन्द्रमा उसके साथ जा रहा है। कूना को लगता कि केवल उसके साथ है। कूना एक छोटे-से घोड़े पर सवार थी। इतना छोटा भी नहीं कि खुद घोड़े पर सवार हो गई हो। उसे बैठाया गया था। सब लोग कूना और बोलू की तरह चन्द्रमा के साथ चलने को जान रहे थे। क्योंकि चन्द्रमा सबके साथ था। जैसे अलग-अलग साथ था। किसी से छूटा नहीं था।

बोलू गुनगुना रहा था। एक मधुर गूँज चन्द्रमा के प्रकाश की तरह चारों तरफ फैली थी। जंगल और बस्ती के पेड़ों की मिलीजुली सर-सर और दिनों की तरह सन्नाटे को नहीं बढ़ा रही थी। बल्कि सन्नाटे को तोड़ते हुए उस मधुर गूँज के संग



थी। इस भीड़ में कुछ गाय-बैल भी थे। उनके गले की घण्टियों की टुनटुन भी थी।

इतने में स्कूल की घण्टी आठ बार बजी। इस तरह बजी कि बच्चों को लगा बहुत देर हो गई है। देर तो हो गई थी। बहुत से बच्चे तो अभी तक सो गए होते। परन्तु स्कूल में सोएँगे के उत्साह में सब चैतन्य थे। साढ़े छह-सात बजे तक स्कूल पहुँच जाते तो अच्छा था। बड़ों ने कहा, जल्दी चलो देर हो रही है। तो कुछ बच्चे दौड़ने लगे। कूना का घोड़ा बोलू के पास पहुँचा ही था कि कूना ने चिल्लाकर कहा, "बोलू देर हो रही है। मेरे घोड़े पर बैठ जा।" बोलू, ने कहा, "नहीं मैं अपने घोड़े से आऊँगा।" कूना ने पूछा, "तुम्हारा घोड़ा कहाँ है?" कूना का घोड़ा दौड़ने के लिए तैयार था। वह तेज़ चलने लगा। फिर दौड़ने लगा।

बोलू गुनगुनाता हुआ बहुत हल्का हो गया था। बोलू ने अपने बाएँ और दाहिने कन्धे में हवा के झोंकों के पंखों को महसूस किया। हवा के पंख लगते ही आकाश उसे लिखा हुआ एक संसार लगा और इस लिखे हुए संसार में "स" के ऊपर लगी बिंदु चन्द्रमा है। उसकी इच्छा चन्द्रमा तक उड़ जाने की हुई। उसे स्कूल जाने की याद आई। दो झोंकों में वह कूना तक पहुँच गया। कूना का घोड़ा खटपट दौड़ रहा था। बोलू हवा के घोड़े पर सवार था। और वह कूना के पास आने लगा। पीछे से उसने बहुत धीरे-से पुकारा, "कूना।" कूना पीछे देख पाती कि बोलू उसके पास से गुज़रा और आगे निकल गया। "मैं आगे स्कूल पहुँचूँगा।" बोलू ने कहा। कूना अचम्भित थी। जैसे यह एक बड़ा जादू था। कूना का घोड़ा भी अचम्भित था। वह ठिठकने लगा था। कूना ने अपने छोटे-छोटे पैरों से एड़ लगाई। कूना ने कहा, "बोलू, मैं तुम्हारे घोड़े पर बैठूँगी। तुम्हारा घोड़ा अच्छा है। नहीं तो मुझको आगे जाने दो।"

"दोनों साथ चलेंगे।" बोलू ने कहा। "तो मैं तुम्हारे घोड़े पर आ जाऊँ?" कूना ने कहा। "मेरा घोड़ा शायद तुम्हारा वज़न न उठा पाए।" बोलू ने कहा।

"तुम्हारा घोड़ा भूखा है?" कूना ने पूछा।

"तुम मोटी हो। दोनों का भार मेरा घोड़ा उठा नहीं पाएगा।"

"अच्छा, मेरा हाथ पकड़ो।" बोलू ने कहा। उसने कूना की ओर दाहिना हाथ बढ़ाया। कूना ने बोलू का हाथ पकड़ा। बोलू कूना के घोड़े से कुछ दूर हुआ। और कूना बोलू का हाथ पकड़े घोड़े से अलग होकर कुछ दूर तक उड़ी। कूना के भार से बोलू झुक गया था। बोलू कूना के घोड़े जितनी ऊँचाई पर था। कूना का पैर धरती के बिलकुल पास था। सामने एक चट्टान थी। कूना ने अपने दोनों पैर ऊपर मोड़ लिए थे कि चट्टान से ना टकराएँ। बोलू इसको जान रहा था। चट्टान



से वह कुछ दूर हट गया। सामने बहुत से पेड़ थे। बोलू गुनगुनाता हुआ अधिक हल्का होने की कोशिश करता पर वह इतना हल्का नहीं हो पा रहा था कि कूना को लिए पेड़ों के ऊपर चला जाता। इसलिए ज़मीन पर उतरने के लिए बोलू चुप होकर गुनगुनाने को बीच-बीच में बन्द कर देता। इससे बोलू थोड़ा-थोड़ा भारी हुआ और उसके साथ कूना के पैर धरती पर लगे। कूना का घोड़ा आगे कहीं निकल गया था। नीचे उतरते ही कूना को अपना घोड़ा याद आया। घोड़े के कारण वह भूल गई कि थोड़ी देर पहले वह उड़ रही थी।

स्कूल पास आ गया। वे स्कूल के मैदान के छोर पर खड़े थे। स्कूल में एक शान्त चहल-पहल थी। सब खिड़की-दरवाज़े खुले थे। सभी गुरूजी होंगे। कक्षा के अन्दर फीका उजाला था कि किताब पढ़ना चाहें तो भी न पढ़ सकें। वैसे भी पाठ्य-पुस्तक नहीं पढ़ना था।

चन्द्रमा आकाश में बल्ब की तरह जल रहा था। चन्द्रमा को फ्लड लाइट कहना ठीक था। वातावरण खेल की रात जैसा था। छुट्टी के दिन की सुबह कल होगी उसकी यह रात थी। स्कूल के बच्चों के साथ उनका घर-परिवार भी स्कूल पहुँचने वाला था। कुछ बच्चों की बातचीत पास आती सुनाई दे रही थी। ऐसा तो नहीं, छोटू हो। चार साथियों की आवाज़ में अकेले बातचीत करता हुआ आ रहा हो। छोटू अगर बजरंग महराज की आवाज़ में बोले तो जंगल से शेर के दहाड़ने की आवाज़ आएगी? सभी छोटू की आवाज़ से धोखा खा जाएँ ऐसा हो नहीं सकता था। शेर धोखा न खाए।

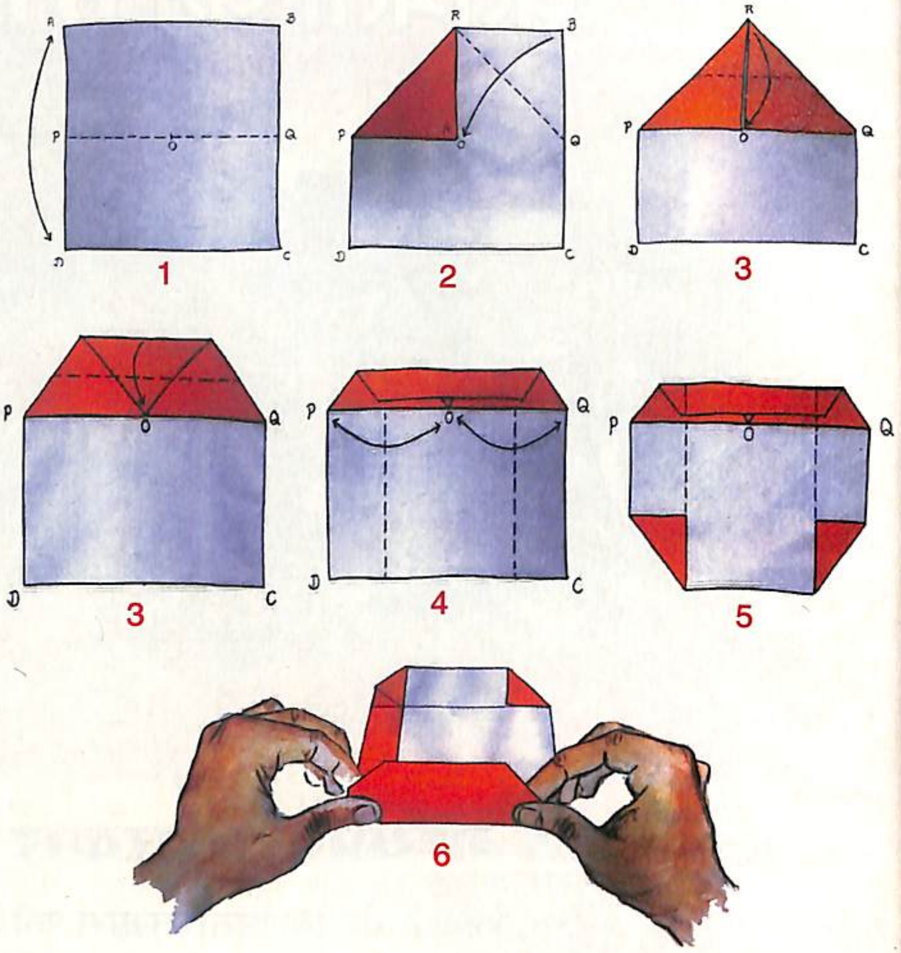
आकाश तारों से भरा था। हो सकता है कि सितारे रात को स्कूल में पढ़ने आते हों। आज बच्चे रात को आ रहे हैं इसलिए स्कूल खाली कर आकाश में भर गए हों। सितारे बच्चों के सवाल थे? ये सवाल उनके मन में उठते थे पर किसी से पूछे नहीं गए थे। शायद न पूछने से तारे बन कर चमक रहे हों कि हमारी ओर ध्यान दो और हमें बच्चों के मन में उत्तर बना दो। हमें हल कर दो। हम अनगिनित शेष हैं। तारों भरी चाँदनी होने से रात लम्बे-चौड़े प्रश्न पत्र की तरह थी।

स्कूल जाने वालों की भीड़ में भैरा भी था। भैरा बोलू को ढूँढ रहा था। इसलिए कभी बाएँ जाता, कभी पीछे, कभी दाएँ। बोलू को ढूँढने के चक्कर में वह भीड़ से अलग होकर अकेला हो गया था। वह अपने किसी भी साथी को ढूँढ नहीं पा रहा था। चाँदनी रात थी पर कोने-कोने में अँधेरे तब भी थे। रात सब तरफ के अँधेरों को भगा नहीं सकती।

भैरा के हाथों में उसका बिस्तर था। भीड़ इतनी नहीं थी कि किसी को ढूँढ नहीं पाएँ। एक तो, इधर-उधर सब बिखरे हुए चल रहे थे और पहचान में तभी आते जब पास आते। तभी भैरा को अपनी आवाज़ सुनाई दी, "बोलू, कूना स्कूल नहीं जाएगी ना।" अगर बोलू दिखता और उसके साथ कूना नहीं होती तो वह बोलू से यही प्रश्न पूछता। परन्तु भैरा तो चुप था। जब चुप था तो उसे अपनी आवाज़ क्यों सुनाई दी? बोलू उसे कब से नहीं मिला था।

जारी...

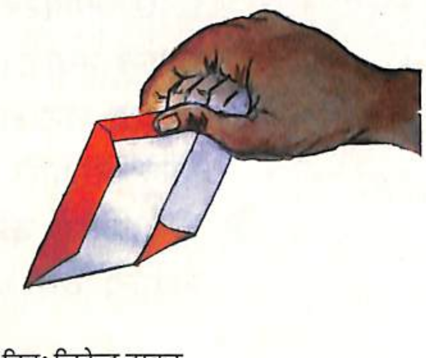
पलटूराम



1. चौकोर कागज़ के चारों कोनों को A, B, C, D नाम दो। चित्र में देखो और कागज़ को बीच से मोड़कर खोल लो। इस मोड़ को PQ नाम दो और इसके बीच के बिन्दु को O।
2. A कोने को O से मिलाते हुए तिरछा मोड़ PR बना लो। इसी तरह B को मोड़कर QR मोड़ बना लो।
3. R कोने को O से मिलाकर मोड़ बना लो। इस नए मोड़ को एक बार फिर O तक मोड़कर एक नया मोड़ बना लो।
4. अब P को O से मिलाकर मोड़ लो। दाईं तरफ भी इसी तरह मोड़ लो और दोनों मोड़ को खोल लो। ये दोनों मोड़ दो दीवारों की तरह होंगे।
5. C व D कोने को चित्रानुसार मोड़ लो।
6. अब हल्के से दबाते हुए दीवारों को खड़ा कर लो। पलटूराम के पलटने के लिए इन दीवारों को सीधा होना बहुत ज़रूरी है।

हो गए पलटूराम तैयार! अब बिना मुड़े हुए हिस्से को थोड़ा-सा अपनी ओर झुकाते हुए छोड़ो और देखो कि पलटूराम पलटियाँ मारते हुए तुम्हारे पास आता है क्या?





चित्र: जितेन्द्र ठाकुर

चुटकी

हरियाणा में अध्यापकों से कहा गया कि वे कभी-कभी गाँव जाकर वहाँ के लोगों को सामान्य ज्ञान की बातें बताया करें। एक बार एक बेहद कमज़ोर मास्टर जी गाँव गए और एक ग्रामीण से बोले, "ताऊ ये धरती घूमती है।"

ताऊ ने मरियल मास्टर जी को देखा और बोला, "बेट्टा, दूध-दही खाया कर। कुछ दिन में तेरी ये चक्कर आने की बीमारी ठीक हो जाएगी।"

प्रस्तुतिः गोविन्द शर्मा

पहेलियाँ

सौ कपड़ों का ओढ़ लबादा
थैले में बैठा शहजादा।

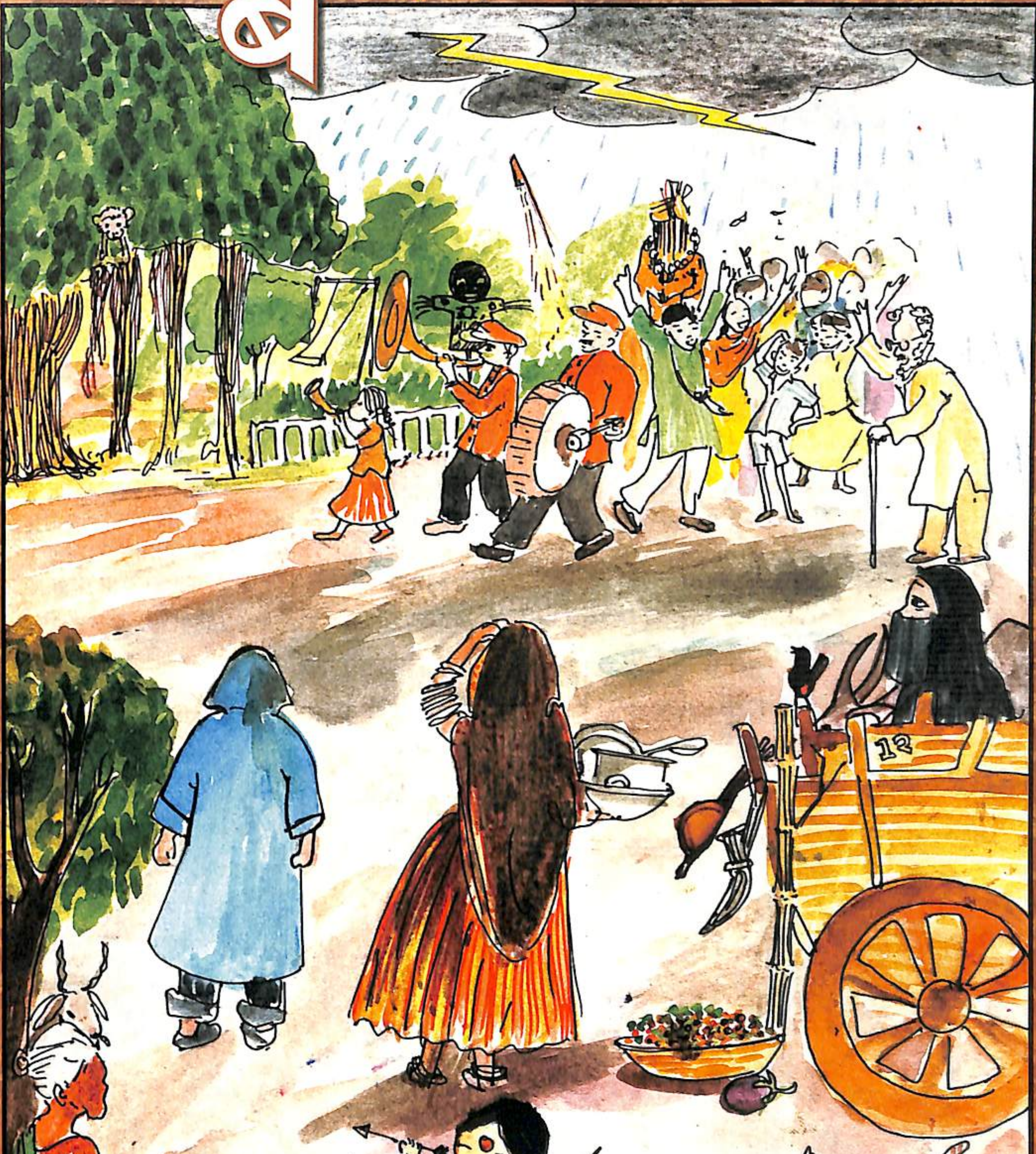


बारह घोड़े तीस गरारी
तीन सौ पैंसठ चढ़ें सवारी।

डिब्बा देखा एक निराला
जिसका न ढक्कन न ताला
न पेन्दा और न ही कोना
बन्द है उसमें चाँदी सोना।

बूझ पहेली सखी सयानी
आधा फूल और आधा पानी

इस पन्ने में ब से शुरू होने वाली कितनी चीज़ें हैं?



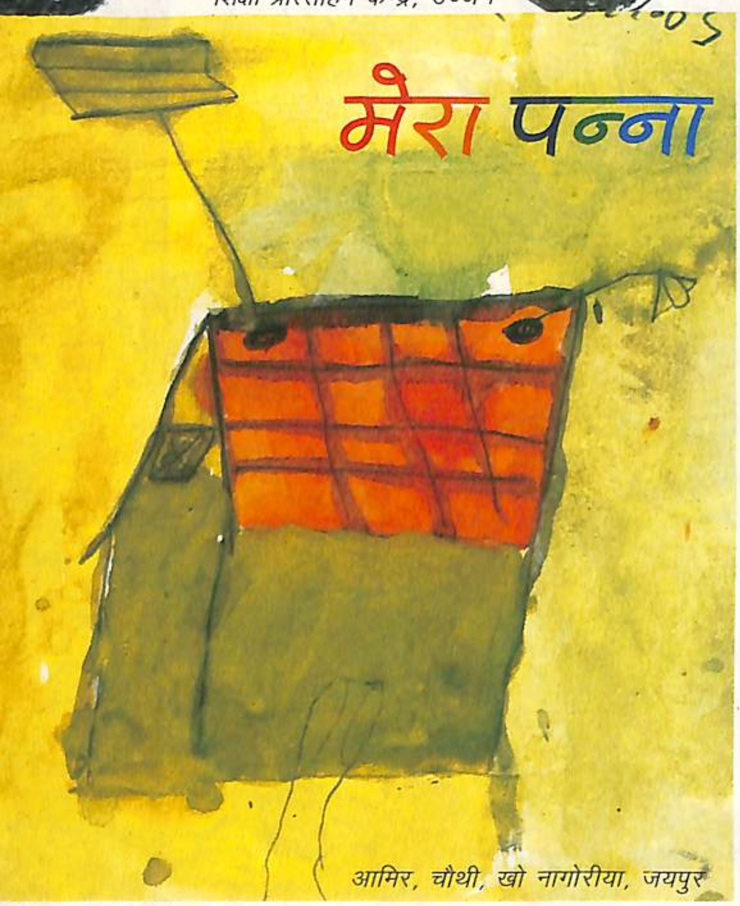
मैंने ढूँढीं....

"ब" से शुरू होने वाली कौन-कौन-सी चीज़ें हमसे छूट गईं? उनके चित्र बनाओ।



सोदान प्रजापत, तीसरी, चन्देसरा, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, उज्जैन

मेरा पन्ना



आमिर, चौथी, खो नागोरीया, जयपुर



च से सुनो पोयम

चाचा लाए चाकू
काटे वो आलू
चाची बैठी मेज़ पर
खाने को कचालू

सौरभ सिंह, पाँच वर्ष, फैज़ाबाद, उ.प्र.

बिल्ली गई दिल्ली

बिल्ली गई दिल्ली
दिल्ली में था बन्दर
लालकिले के अन्दर
बन्दर ने दी मूँगफली
बिल्ली लेकर उसे चली।
रास्ते में था भालू
भालू बोला - मैं खा लूँ
बिल्ली बोली झट म्याऊँ
बिल्ली ने मारा पंजा
भालू हो गया गंजा।

लक्ष्मी गौड़, छठी, कानपुर, उ.प्र.





सालभर

काश कि
स्कूल न होता
या किसी गाड़ी पर चढ़
भाग जाता दूर
स्वर्ग में पड़ा रहता
या किसी नर्क में
खूब सज़ा पाता
पर क्या फायदा
सपने लेने का?

या फिर काश कि
स्कूल में
छुट्टियाँ ही रहतीं
कि गर्मियाँ
कभी खत्म न होतीं
मत पूछो कि क्यों
बस साल भर
छुट्टियाँ ही रहतीं

बोलो कितना अच्छा होता!

पर मौसम पर
हमारा क्या वश?
हम सोचते ही रहेंगे
कि खुदा हमारी मान ले
और साल भर
छुट्टियाँ ही रहें।

लिज़ा ज़िल ब्राउन, कक्षा चौथी
अँग्रेज़ी से अनुवादः रुस्तम व लाल्टू
संयुक्त राष्ट्र संघ के संकलन से साभार









दही हण्डी का खेल

मैं अपने बाबा के साथ डेक्कन चौक में दही हण्डी का कार्यक्रम देखने गई थी। वहाँ बहुत भीड़ थी। ज़ोर-ज़ोर से गोविन्दा आला रे आला....... यह गाना बज रहा था। कुछ लोग छोटे-बड़े घर की छत, गैलरी में तो कुछ पेड़ पर चढ़कर कार्यक्रम देख रहे थे। मैं दुकान के कट्टे पर खड़ी थी। दही हण्डी फोड़ने के लिए बच्चे एक के ऊपर एक खड़े होते थे। ऊपर जाते-जाते बीच में ही गिर पड़ते, फिर चढ़ते। दही हण्डी बहुत ऊपर बाँधी थी। बहुत देर बाद लाल टी-शर्ट वाले ग्रुप ने हण्डी फोड़ी। सब लोग तालियाँ बजाने लगे। नाचने लगे। मैंने भी बहुत तालियाँ बजाईं।

शिवानी प्रकाश लालगे, पहली, सतारा, महाराष्ट्र (मराठी से अनुवाद - शुभांगी तावरे)



मंजू, चौथी, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र नरवर, म. प्र.

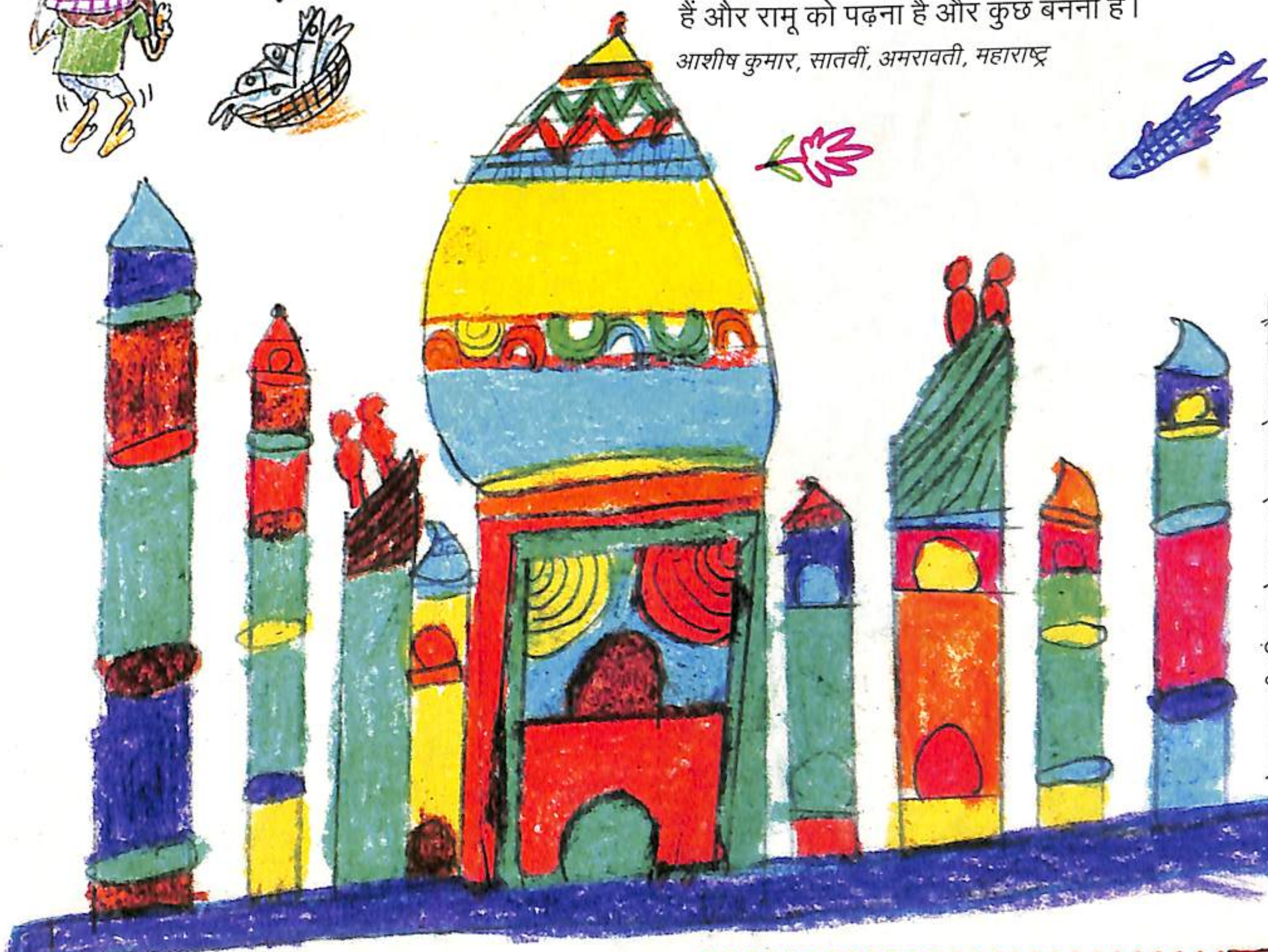




रामू और मछली

हमारे गाँव में रामू नाम का एक छोटा-सा लड़का है जो चौथी में पढ़ता है। रोज़ सुबह स्कूल जाने से पहले वह तालाब पर जाकर मछली पकड़ता है और बाज़ार में जाकर उनको बेचता है। उसको मछली खाना बहुत पसन्द है फिर भी वह खाता नहीं है क्योंकि मछली बेचकर पैसे मिलते हैं और उसी पैसे से वह किताबें खरीदता है और स्कूल की फीस देता है क्योंकि उसके माँ-पिताजी उसको पढ़ाने के लिए मना करते हैं और रामू को पढ़ना है और कुछ बनना है।

आशीष कुमार, सातवीं, अमरावती, महाराष्ट्र



रेखा, दूसरी, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र चन्देसरा, उज्जैन

मैं जिससे शादी करूँगी...

सी एन सुब्रह्मण्यम

यह किस्सा एक दिलेर व दिलदार लड़की का है। और एक बादशाह की प्रेम कहानी भी है। हमीदा बानो नाम की इस लड़की की उमर कोई चौदह साल की रही होगी। और वह बादशाह भी कोई विशाल साम्राज्य का शहंशाह नहीं था। दुश्मनों से हारकर इधर-उधर भटकता बादशाह था। मगर था तो बादशाह। हम मुगल वंश के दूसरे बादशाह हुमायूँ की बात कर रहे हैं।



हमीदा बानो

हुमायूँ की सौतेली माँ के घर दावत थी। इस दावत में एक हमीदा बानो बेगम भी थी। हुमायूँ उस पर फिदा हो गया। वह उससे शादी करना चाहता था। इससे आगे की कहानी हम हुमायूँ की बहन से गुलबदन बेगम से सुनते हैं...

दूसरे दिन बादशाह मेरी माँ के पास पहुँचे। और बोले कि किसी को भेजकर हमीदा बानो को बुलवाओ। पर हमीदा नहीं आई। उसने कहलवाया कि अगर मुझे बुलाने का मकसद यह है कि मैं बादशाह को सलाम करूँ तो वह तो मैं कल ही कर चुकी हूँ। अब किसलिए आऊँ? कई बार उसे बुलवाने की कोशिश हुई लेकिन वह मना करती रही।

हुमायूँ अपनी सौतेली माँ से मिन्नतें करता रहा कि वह किसी तरह हमीदा को शादी के लिए राज़ी कर ले। उसकी कोई भी शर्त मंजूर होगी।

मिन्नतों-मनौतियों का यह सिलसिला पूरे 40 दिनों तक चला। पर हमीदा बानो बेगम राज़ी नहीं हुई। मेरी माँ ने हमीदा को नसीहत भी दी कि आखिर किसी से तो तेरी शादी होगी। तो बादशाह से बेहतर कौन हो सकता है?

इस नसीहत के जवाब में जो हमीदा ने कहा वह एक खुद्दार लड़की ही कह सकती थी। उसके जवाब को पहले फारसी में पढ़ें और बाद में हिन्दी में।

आरे व कसे ख्वाहम रसीद कि दस्ते मन व गिरेबाने उ ब रसद - न आं कि न सके बरसम कि दस्ते मन मीदानम व दामने उ न रसद।

बेशक, मेरा विवाह उस आदमी से होगा जिसके गिरेबान (कमीज़ की कॉलर) तक मेरा हाथ पहुँच सकेगा, न कि उस व्यक्ति से जिसके बारे में मैं जानती हूँ कि उसके दामन (लम्बे कोट) के किनारे तक भी मेरा हाथ पहुँच नहीं सकता।

एक सामान्य लड़की को अगर किसी बादशाह से शादी करने का मौका मिले तो हम सोचेंगे कि वह खुशी-खुशी राज़ी हो जाएगी। लेकिन इस दिलदार लड़की ने तय कर रखा था कि वह उसी से शादी करेगी जो उससे समानता का बरताव करेगा। (गिरेबान हाथ में आने का मतलब है दोनों के बीच में हैसियत का अन्तर ज़्यादा न होना)।

खैर, अन्त में हुमायूँ उसे मनाने में कामयाब हुआ और उनकी शादी भी हुई। हमीदा हुमायूँ के बुरे से बुरे दिनों में भी उसके साथ रही। उसके साथ थार के रेगिस्तान में भटकते हुए एक छोटे-सी जगह पर शरण लेकर उसने एक बेटे को जन्म दिया। यही बच्चा बड़ा होकर हिन्दुतान का सबसे प्रसिद्ध बादशाह अकबर बना। अकबर के बारे में कहा जाता है कि वह अपनी माँ की बात कभी नहीं टालता था चाहे वह उसे कितनी ही नापसन्द क्यों न हो।

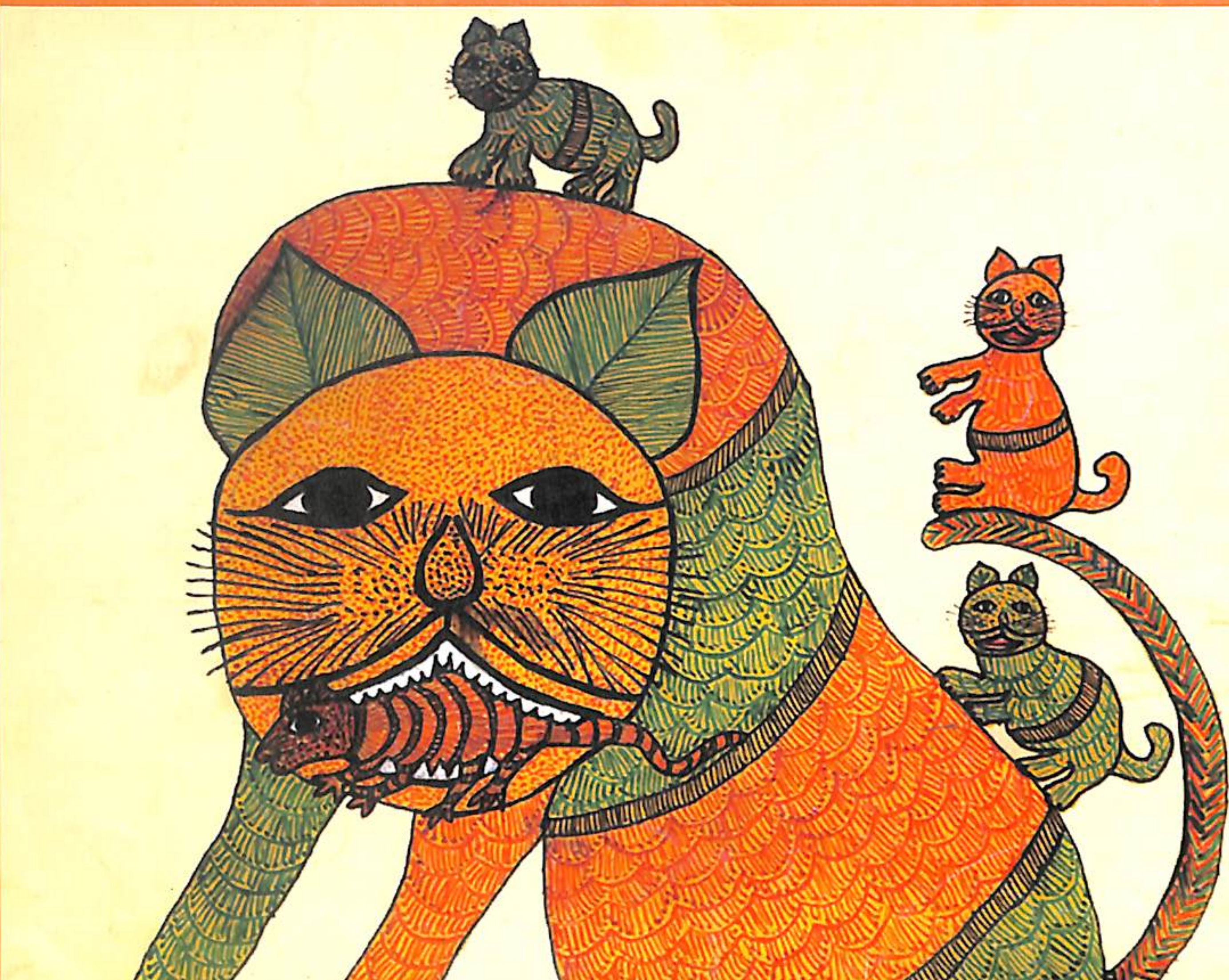
- क्या तुम्हें लगता है कि शादी के बाद पति व पत्नी के बीच समानता होना चाहिए?
- क्या अमीर व गरीब शादी करें तो उनके बीच समानता का व्यवहार नहीं हो सकता है?
- तुम कौन-कौन से फारसी शब्दों के अर्थ समझ सके, उनकी सूची बनाकर लिखो।

गुलबदन बेगम

गुलबदन बेगम दरअसल हुमायूँ की सौतेली माँ की बेटी थी जो हुमायूँ से बहुत प्यार करती थी। हुमायूँ के मरने के काफी साल बाद अकबर ने उससे आग्रह किया था कि वह बाबर और हुमायूँ की जीवनी लिखे। गुलबदन का *हुमायूँ नामा* एकमात्र ऐसी मुगल इतिहास की किताब है जिसे एक महिला ने लिखा है। इस कारण इस पुस्तक से हमीदा जैसी कई महिलाओं के बारे में और मुगल इतिहास में उनकी भूमिका के बारे में पता चलता है।


गुलबदन बेगम से साभार

पंजीयन क्र. 50309/85 के अन्तर्गत भारत सरकार के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/ भोपाल/2006-08



मध्यप्रदेश की लोक चित्रकला की *परधान शैली* का एक चित्र। यह चित्र रोशनी व्याम ने बनाया है। रोशनी भोपाल में रहती हैं और दसवीं में पढ़ती हैं।

स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो प्रकाशक, मुद्रक सी. एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक, एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल-462016, (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित। सम्पादकः सुशील शुक्ल।